हिंदी
भाषा शिक्षण

वर्ष - प्रथम, सेमेस्टर - प्रथम

द्विवर्षीय डी0एल0एड0 पाठ्यक्रम
पर आधारित संदर्भ सामग्री

वर्ष - 2024

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी
(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश)

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश)

डी०एल०एड० पाठ्यक्रम पर आधारित हिन्दी भाषा शिक्षण हेतु प्रशिक्षण सन्दर्भ सामग्री का विकास

वर्ष - प्रथम, सेमेस्टर - प्रथम

वर्ष - 2024

मुख्य संरक्षक : **डॉ० एम.के. शन्मुगा सुन्दरम,** प्रमुख सचिव, बेसिक शिक्षा, उ०प्र० शासन।

संरक्षक : **श्रीमती कंचन वर्मा,** महानिदेशक (स्कूल शिक्षा), उ०प्र० तथा राज्य परियोजना निदेशक, उ०प्र० सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद्, लखनऊ।

निर्देशन : **श्री गणेश कुमार,** निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ।

परामर्श : **डॉ० पवन कुमार,** संयुक्त निदेशक (एस०एस०ए०), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ।

समन्वयन : **श्रीमती चन्दना रामइकबाल यादव,** निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।
डॉ० ऋचा जोशी, पूर्व निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

समीक्षा : **डॉ० रामसुधार सिंह,** (पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, यू०पी० कॉलेज, वाराणसी), **प्रो० सत्यपाल शर्मा,** (प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बी०एच०यू०), **डॉ० उदय प्रकाश,** (प्रोफेसर, श्री बलदेव पी०जी० कालेज, बड़ागाँव, वाराणसी)

सम्पादन : **डॉ० प्रदीप जायसवाल,** शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।
श्री देवेन्द्र कुमार दुबे, शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

लेखक मंडल : **डॉ० प्रसून कुमार सिंह** (प्रवक्ता, डायट, प्रयागराज), **डॉ० दिनेश कुमार यादव** (प्रवक्ता, डायट, कौशाम्बी), **डॉ० अजीत कुमार धुसिया** (प्रवक्ता, डायट, मऊ), **डॉ० जितेन्द्र गुप्ता** (प्रवक्ता, डायट, सन्त कबीर नगर), **श्री अमरेन्द्र कुमार मिश्र** (प्रवक्ता, डायट, प्रतापगढ़), **डॉ० मनीष कुमार यादव** (प्रवक्ता, सी०टी०ई०, वाराणसी), **डॉ० हरिओम त्रिपाठी** (प्रवक्ता, डायट, सुलतानपुर), **श्री योगिराज मिश्र** (प्रवक्ता, रा०शि०सं०, प्रयागराज), **श्री आदर्श कुमार सिंह** (प्रवक्ता, डायट, देवरिया), **श्री विनय कुमार मिश्र** (प्रवक्ता, डायट, फतेहपुर), **श्री सुदर्शन यादव** (से०नि० प्रवक्ता, डायट, गोरखपुर), **डॉ० अभिषेक दुबे** (प्रवक्ता, वि०ना०रा०इ० कॉलेज, भदोही), **डॉ० प्रेमलता** (प्रवक्ता, पं०दी०उ०मा०इ० कॉलेज, अम्बेडकरनगर), **डॉ० चंचल** (प्रवक्ता, बा०इ० कॉलेज, मऊ), **डॉ० दीपा द्विवेदी** (प्रवक्ता, रा०बा०इ० कॉलेज, सुल्तानपुर), **डॉ० विभा सिंह** (स०अ०, कि०इ० कॉलेज, बरहनी, चन्दौली), **श्री मनमोहन सिंह यादव** (स०अ०, रा०हा० स्कूल, खानपुर, गाजीपुर), **डॉ० नीलम वर्मा** (स०अ०, रा०हा० स्कूल, गरला, चन्दौली), **डॉ० विशालाक्षी देवी** (स०अ०, रा०बा०इ० कॉलेज चोलापुर, वाराणसी), **श्रीमती रीतू सिंह** (स०अ०, रा०हा० स्कूल, चितईपुर, वाराणसी), **श्रीमती नंदिता शर्मा** (स०अ०, रा०हा० स्कूल, धौरहा, वाराणसी), **श्री अजीत प्रकाश आनंद** (स०अ०, वि०ना०रा०इ० कॉलेज, भदोही), **डॉ० प्रतिभा मिश्रा** (स०अ०, उ०प्रा०वि० पाली, भदोही), **श्री प्रवीण कुमार द्विवेदी** (स०अ०, उ०प्रा०वि० धरतीडोलवा, सोनभद्र), **श्री मिथिलेश कुमार सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० पचेवरा, मीरजापुर), **श्री शैलेश कुमार सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० कैनाल बस्ती, मीरजापुर), **श्री विकास शर्मा** (स०अ०, क०वि० नगला सूरजभान, आगरा) **श्री रामनारायण द्विवेदी** (स०अ०, प्रा०वि० अयोध्या, वाराणसी), **श्री रविन्द्र कुमार यादव** (स०अ०, प्रा०वि० हडियाडीह, वाराणसी), **डॉ० भानुप्रकाश धर द्विवेदी** (स०अ०, कं०वि० बढ़ैनी कला, वाराणसी), **श्रीमती नीलम सिंह** (स०अ०, उ०प्रा०वि० बारीगाँव, भदोही), **डॉ० सरोज पाण्डेय** (स०अ०, प्रा०वि० गाडीवानपुर, वाराणसी), **श्री हिमांशु मिश्रा** (स०अ०, कं०वि० ढोलो, सोनभद्र), **श्रीमती रश्मि रूपम** (स०अ०, प्रा०वि० मंगोलेपुर, वाराणसी), **डॉ० नितिकेश यादव** (स०अ०, क०वि० चकवा, जौनपुर)

डिजायनिंग एवं ग्राफिक्स : **श्री विकास शर्मा** (सहायक अध्यापक, कम्पोजिट विद्यालय नगला सूरजभान, शमसाबाद, आगरा)

आवरण : **श्री कासिम फ़ारुखी,** (प्रवक्ता–कला, राज्य शिक्षा संस्थान, उ०प्र०, प्रयागराज)

आभार प्रशिक्षण संदर्भ साहित्य के विकास में अनेक पुस्तकों का अवलोकन व पाठ्यसामग्री का उपयोग किया गया है। हम उनके प्रति आभारी हैं।

निदेशक की कलम से

गणेश कुमार
निदेशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
फोन (कार्यालय) : 0522–2780385, 2780505
(फैक्स) : 0522–2781125
ई–मेल : dscertup@gmail.com

संदेश

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषायी कौशल के समुचित विकास से सभी विषयों को सीखना सरल, सुगम एवं प्रभावी हो जाता है। बच्चों में अपेक्षित भाषायी कौशल विकसित करने के उद्देश्य से शिक्षकों को प्रभावी प्रशिक्षण प्रदान करना हमारी प्राथमिकता है। हिन्दी शिक्षण को सरल, रुचिकर व बोधगम्य बनाने, रचनात्मक चिंतन एवं प्रभावी संप्रेषण कौशल के विकास एवं प्रशिक्षकों में क्षमता संवर्धन हेतु राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी द्वारा द्विवर्षीय डी0एल0एड0 पाठ्यक्रम पर आधारित **'हिन्दी भाषा शिक्षण'** हेतु प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री का विकास किया गया है।

प्रस्तुत प्रशिक्षण साहित्य के माध्यम से शिक्षक–प्रशिक्षकों एवं डी0एल0एड0 प्रशिक्षुओं में प्रभावी हिन्दी शिक्षण कौशल एवं भाषायी दक्षताओं की समझ को बेहतर बनाने हेतु नवाचारी गतिविधियों, क्रिया–कलापों, युक्तियों, आदर्श शिक्षण प्रविधि एवं योजनाएँ, आदर्श प्रश्न–पत्र, केस स्टडी, श्रव्य–दृश्य सामग्री आदि को समाहित करते हुए आदर्श भाषा शिक्षण के क्रियान्वयन को प्रोत्साहित किया गया है। इसके माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में उल्लिखित भाषायी कौशल के विकास सम्बन्धी अनुशंसा को क्रियान्वित करने में भी सफलता मिलेगी।

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी का यह प्रयास सराहनीय है। हिन्दी भाषा शिक्षण हेतु प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री के विकास एवं प्रयोग से जुड़े सम्बन्धित समस्त हितधारकों को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएँ।

29/11/2024
(गणेश कुमार)

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानती है कि शिक्षा व्यवस्था में मौलिक सुधारों का केंद्र शिक्षक होता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। इसी के दृष्टिगत डी0एल0एड0 के हिन्दी विषय के पाठ्यक्रम पर आधारित सेमेस्टरवार (कुल चार सेमेस्टर) प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री का विकास किया गया है। इस प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री द्वारा डी0एल0एड0 प्रशिक्षण हेतु प्रामाणिक व उपयोगी संदर्भ सामग्री के अंतर्गत सरल एवं सहज गतिविधियों एवं क्रिया–कलापों का संकलन करते हुए उनके कक्षा–कक्ष में क्रियान्वयन हेतु प्रोत्साहित किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अनुशंसा इस बात को महत्व देती है कि गतिविधियाँ एवं शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री आदि के अनुप्रयोग से बच्चे तेजी से विषय की अवधारणाओं को समझ लेते हैं। इस परिप्रेक्ष्य से प्रस्तुत पुस्तक में भाषाई कौशलों के विकास, हिंदी भाषा की ध्वनियों को सुनकर समझते हुए शुद्ध उच्चारण करना, देवनागरी लिपि की विशेषताएँ, विराम चिह्नों का प्रयोग, रचनात्मकता तथा शिक्षण विधियों को नवाचारी तरीके से सीखने–समझने का प्रयास किया गया है। इसकी सहायता से जहाँ एक और प्रशिक्षक डी0एल0एड0 शिक्षकों को आनंदपूर्ण ढंग से प्रशिक्षित कर सकेंगे, वहीं दूसरी ओर डी0एल0एड0 प्रशिक्षु भी इसकी सहायता से विद्यालय में बच्चों को खेल–खेल में भाषाई कौशल सिखा पाने में सक्षम होंगे।

मेरा विश्वास है कि डी0एल0एड0 के हिन्दी विषय के पाठ्यक्रम पर आधारित सेमेस्टरवार विकसित प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री शिक्षक–प्रशिक्षकों को प्रभावी प्रशिक्षण करने में उपयोगी सिद्ध होगी तथा सेवापूर्व प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी0एल0एड0 प्रशिक्षुओं के लिए भी अपनी अर्थपूर्ण भूमिका निभाएगी।

(चन्दना रामइकबाल यादव)
निदेशक
राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश,
वाराणसी।

कक्षा–शिक्षण : विषयवस्तु

- हिन्दी भाषा में ध्वनियों को सुनकर समझना एवं शुद्ध उच्चारण।
- देवनागरी लिपि के समस्त लिपि संकेतों, स्वर, व्यंजन, संयुक्त वर्ण, संयुक्ताक्षर मात्राओं का ज्ञान।
- विलोम, समानार्थी, तुकांत व समान ध्वनियों वाले शब्दों की पहचान।
- अल्प विराम, अर्द्धविराम, पूर्णविराम, प्रश्न वाचक, विस्मयबोधक, अवतरण चिह्न, विराम चिह्न का ज्ञान और उनका प्रयोग।
- लेखन शिक्षण की विधियाँ और लिखना, सीखने में ध्यान रखने योग्य बातें– बैठने का ढंग, आँखों से कागज की दूरी, कलम पकड़ने की विधि, शिरोरेखा, लिपि, अक्षर की सुडौलता और उपयुक्त नमूने, अभ्यास, सुलेख, अनुलेख–श्रुतलेख।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल– प्रशिक्षु शिक्षकों को हिन्दी के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, जानकारी एवं घटनाओं के अंतर संबंधों को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, खेल, गतिविधि, दृश्य–श्रव्य (वीडियो/ऑडियो) सामग्री तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- अक्षर, मात्रा, शब्द, स्वर, व्यंजन, संयुक्त वर्ण, संयुक्ताक्षर सीखने हेतु शिक्षण सामग्री/मॉडल/सामग्री का निर्माण।
- अल्पविराम, अर्द्धविराम, पूर्ण विराम, प्रश्नवाचक, विस्मयबोधक चिह्नों को स्पष्ट करने हेतु शिक्षण–सामग्री/मॉडल/सामग्री/उदाहरण का निर्माण।
- बाल कविताओं, बालगीतों, बालकथाओं व गतिविधियों का संग्रह एवं उन पर आधारित नाटक प्रस्तुत करना।
- उच्चारण के शुद्धीकरण हेतु ऑडियो–वीडियो सामग्री।
- कक्षा शिक्षण की दृष्टि से समाचार–पत्रों/पत्रिकाओं से सामग्री का संकलन तैयार करना।

विषय सूची

इकाई 1

पृष्ठ संख्या : 10–21

हिन्दी भाषा में ध्वनियों को सुनकर समझना एवं शुद्ध उच्चारण

1.1- ध्वनि
1.2- भाषा की परिभाषा एवं स्वरूप
1.3- ध्वनियों का स्वरूप
1.4- ध्वनि उच्चारण की प्रक्रिया
1.5- उच्चारण स्थान
1.6- उच्चारण प्रयत्न
1.7- ध्वनि भेद
1.8- स्वर
1.9- व्यंजन ध्वनियाँ

इकाई 2

पृष्ठ संख्या : 22–35

देवनागरी लिपि के समस्त लिपि संकेतों, स्वर, व्यंजन, संयुक्त वर्ण, संयुक्ताक्षर मात्राओं का ज्ञान

2.1- लिपि
2.2- देवनागरी लिपि की विकास यात्रा
2.3- देवनागरी लिपि का नामकरण
2.4- देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता
2.5- देवनागरी लिपि संकेत (वर्ण)

इकाई 3

पृष्ठ संख्या : 36–43

विलोम, समानार्थी, तुकांत व समान ध्वनियों वाले शब्दों की पहचान

3.1- शब्द
3.2- शब्द के भेद
3.3- विलोम शब्द
3.4- तुकांत शब्द
3.5- समान ध्वनि वाले शब्द
3.6- समानार्थी शब्द

इकाई 4

पृष्ठ संख्या : 44–53

अल्प विराम, अर्द्धविराम, पूर्णविराम, प्रश्न वाचक, विस्मयबोधक, अवतरण चिह्न, विराम चिह्न का ज्ञान और उनका प्रयोग

4.1- विराम चिह्न
4.2- विराम चिह्नों के प्रकार/वर्गीकरण
4.3- अल्पविराम
4.4- अर्द्धविराम
4.5- पूर्णविराम
4.6- प्रश्नवाचक चिह्न
4.7- विस्मयादि बोधक चिह्न
4.8- अवतरण/उद्धरण चिह्न

इकाई 5

पृष्ठ संख्या : 54–68

लेखन शिक्षण की विधियाँ और लिखना, सीखने में ध्यान रखने योग्य बातें- बैठने का ढंग, आँखों से कागज की दूरी, कलम पकड़ने की विधि, शिरोरेखा, लिपि, अक्षर की सुडौलता और उपयुक्त नमूने, अभ्यास, सुलेख, अनुलेख-श्रुतलेख

5.1- लेखन
5.2- लेखन कौशल
5.3- लेखन कौशल विकास के विभिन्न चरण
5.4- बोलने और लिखने में अंतर
5.5- लेखन का महत्त्व
5.6- लेखन का उद्देश्य
5.7- व्यवस्थित लेखन के सोपान
5.8- लेखन कौशल के आयाम
5.9- लेखन शिक्षण की विधियाँ
5.10- लिखना सिखाने में ध्यान देने योग्य बातें
5.11- सुलेख
5.12- अनुलेख
5.13- श्रुतलेख

- प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र मॉडल पेपर
- आदर्श शिक्षण योजना प्रारूप
- आदर्श पाठ योजना प्रारूप

इकाई 1
हिन्दी भाषा में ध्वनियों को सुनकर समझना एवं शुद्ध उच्चारण

1.1- ध्वनि
1.2- भाषा की परिभाषा एवं स्वरूप
1.3- ध्वनियों का स्वरूप
1.4- ध्वनि उच्चारण की प्रक्रिया
1.5- उच्चारण स्थान
1.6- उच्चारण प्रयत्न
1.7- ध्वनि भेद
1.8- स्वर
1.9- व्यंजन ध्वनियाँ

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु स्वर ध्वनियों का स्पष्ट उच्चारण कर लेते हैं।
2. प्रशिक्षु स्वरों की संख्या बता लेते हैं।
3. प्रशिक्षु व्यंजन ध्वनियों का स्पष्ट उच्चारण कर लेते हैं।
4. प्रशिक्षु स्वर ध्वनियों एवं व्यंजन ध्वनियों में अंतर स्पष्ट कर लेते हैं।
5. प्रशिक्षु स्वरों एवं व्यंजनों का उच्चारण स्थान बता लेते हैं।
6. प्रशिक्षु स्पर्श व्यंजन, अनुनासिक व्यंजन, द्विगुण व्यंजन एवं संयुक्ताक्षरों की संख्या बता लेते हैं।
7. प्रशिक्षु वाग्यंत्रों के बारे में जानते हैं।

1.1 ध्वनि

भाषा मनुष्य की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है जो मानव हृदय के अंधकार को दूर करती है। भाषा के अभाव में मनुष्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। आचार्य दण्डी ने कहा है कि यदि शब्द रूपी ज्योति संसार में न जलती तो संसार में चारो ओर अंधकार ही रहता–

> "इदमन्धं तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
> यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।"
> (काव्यादर्श 1–4,दण्डी)

भाषा मनुष्य के लिए भावाभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ–साथ सीखने का साधन भी है। मनुष्य अपनी भाषा में ही सोचता है, तर्क करता है, कल्पना करता है, कार्य–कारण संबंधों की तलाश करता है, यहाँ तक कि नेतृत्व करने की क्षमता भी भाषा से ही पैदा होती है। भाषा और समाज की विभिन्न मानसिक–सामाजिक क्षमताओं के विकास में अन्योन्याश्रित संबंध है। अतः प्राथमिक स्तर से ही भाषा संबंधी दक्षताओं के विकास के समुचित प्रयास किए जाने चाहिए।

'ध्वनि' भाषा की लघुतम इकाई है। ध्वनि की उत्पत्ति मनोवैज्ञानिक एवं जैविक प्रक्रिया है, जैसे कि चिड़ियों का चहचहाना, गायों का रँभाना, यातायात के संकेत, हाथ हिलाकर बुलाना या मना करना, आँखों के इशारे से क्रोध या प्रेम प्रकट करना, सिर नीचा करके स्वीकृति या अस्वीकृति देना इत्यादि भी भावाभिव्यक्ति के साधन हैं। भावाभिव्यक्ति के इन साधनों को सामान्य तौर पर भाषा कह दिया जाता है। इनके माध्यम से सीमित भावों को ही व्यक्त किया जा सकता है, जबकि भाषा का स्वरूप अत्यंत व्यापक है। वस्तुतः भाषा मनुष्य की वागिन्द्रियों से उच्चरित ध्वनि संकेत हैं। जिन ध्वनि संकेतों की सहायता से मनुष्य अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त कर सके, वह भाषा है।

ध्वनियाँ भाषा का आधारभूत तत्त्व हैं। जब हम भाषा बोलते हैं तो वास्तव में क्रमशः विभिन्न ध्वनियों का उच्चारण करते हैं और ध्वनियों से निर्मित शब्दों के माध्यम से विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। ध्वनियों के प्रभावी शिक्षण के माध्यम से ही भाषा के विभिन्न कौशलों यथा सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना को

विकसित किया जा सकता है। इस प्रकरण में हिन्दी भाषा संबंधी ध्वनियों के अध्ययन के माध्यम से ध्वनि के अर्थ, स्वरूप, ध्वनि उत्पादन, श्रवण की प्रक्रिया, एवं हिन्दी भाषा की ध्वनियों और उनके भेदों का अध्ययन किया जायेगा। इस प्रकरण में ध्वनि–चर्चा के साथ–साथ शुद्ध उच्चारण की प्रक्रिया पर भी चर्चा की जायेगी।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं के सहयोग से ध्वनि शिक्षण आधारित विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करेंगे।
2. प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को विभिन्न व्यावहारिक गतिविधियों के प्रस्तुतीकरण के माध्यम से वाग्यंत्र और ध्वनि उच्चारण की प्रक्रिया को स्पष्ट करेंगे।
3. प्रशिक्षक ध्वनि भेद के विभिन्न आधारों को स्पष्ट करेंगे।
4. प्रशिक्षक शुद्ध उच्चारण की प्रक्रिया से प्रशिक्षुओं को अवगत कराते हुए शुद्ध उच्चारण का अभ्यास छोटे समूहों में करवाएँगे।

प्रशिक्षुओं के लिए निर्देश

1. प्रशिक्षु द्वारा कक्षा शिक्षण में आयोजित विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रूप से प्रतिभाग करें।
2. प्रशिक्षु ध्वनि शिक्षण आधारित विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों का संकलन तैयार करेंगे एवं क्रियात्मक प्रशिक्षण में इनका उपयोग कक्षा शिक्षण हेतु करेंगे।
3. प्रशिक्षु वाग्यंत्र का थ्री॰डी॰ मॉडल तैयार करेंगे एवं उसका उपयोग ध्वनि उत्पादन एवं उच्चारण की प्रक्रिया को समझने के लिए करेंगे।
4. प्रशिक्षु अशुद्ध उच्चारण वाले कठिन वर्णों, संयुक्ताक्षरों, अनुस्वार एवं अनुनासिक वर्णों को चिह्नित करते हुए शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

गतिविधि का नाम : सुनो–सुनाओ
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : चार्ट पेपर, मार्कर
उद्देश्य : विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना

❖ प्रशिक्षक चार्ट पेपर पर कोई कविता, कहानी या गीत लिखकर हाव–भाव के साथ स्पष्ट उच्चारण करने के लिए कहेंगे।
❖ प्रशिक्षु निम्नलिखित पंक्तियों को बच्चों से हाव–भाव के साथ स्पष्ट उच्चारण करने के लिए कहेंगे–

टप–टप, टप–टप बरसा पानी,
नाच रही मधुमक्खी रानी।
मधुमक्खी ने मुझे बुलाया,
गुन–गुन सुंदर गाना गाया।

- कविता में एक वर्ण से बने एक से अधिक शब्दों को छाँटने को कहें। जैसे– टप–टप, टप–टप व गुन–गुन।
- कविता में आए प्रत्येक शब्द की प्रथम ध्वनि की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए उन ध्वनियों से नए शब्द बनाने को प्रेरित करेंगे तथा उनका उच्चारण करने को प्रोत्साहित करेंगे।

प्रशिक्षक बच्चों से कुछ प्रश्न पूछेंगे, जैसे–

- आपका नाम क्या है?
- आप कितने भाई–बहन हैं?
- आपके पिता का क्या नाम है? आदि।

उत्तर में प्राप्त शब्दों और वाक्यों को प्रशिक्षक पट्ट(बोर्ड) पर लिखेंगे। जब प्रशिक्षक अधिक ध्वनियों की मौलिक समझ के प्रति आश्वस्त हो जाएँ, तब वह ध्वनियों के व्याकरणिक पक्ष पर विस्तार से चर्चा करें, जैसे– स्वर, व्यंजन, संयुक्त व्यंजन आदि।

तदुपरांत शिक्षक–प्रशिक्षक भाषा, भाषा की परिभाषा, वाग्यंत्र, ध्वनि उत्पादन की प्रक्रिया, एवं ध्वनियों के भेद इत्यादि पर विस्तार से चर्चा–परिचर्चा करेंगे।

1.2 भाषा की परिभाषा एवं स्वरूप

भाषा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'भाष्' धातु से मानी जाती है। सामान्यतः सार्थक ध्वनियों के प्रयोग से व्यक्त वाणी को भाषा कहते हैं। भाषा के माध्यम से ही हम अपने विचारों, भावनाओं को दूसरे व्यक्तियों तक संप्रेषित करते हैं।

> **"जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार विनिमय करता है, उसको समष्टि रूप में भाषा कहते हैं।"**
>
> **– डॉ0 बाबूराम सक्सेना**

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जिन सार्थक ध्वनि संकेतों के माध्यम से मनुष्य अपने भावों और विचारों को सहजता से व्यक्त करता है उसे ही समष्टि रूप से भाषा कहते हैं।

1.3 ध्वनियों का स्वरूप

हम सभी जानते है कि संसार में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। भाषा मूलतः सुनी और बोली जाती हैं। सुनने एवं बोलने में ध्वनि शामिल होती है। प्रत्येक भाषा में कुछ मूल ध्वनियाँ होती हैं, इन ध्वनियों के सार्थक समूह से शब्द का निर्माण होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ध्वनि शब्दों की आधारशिला है। व्यावहारिक रूप से ध्वनि को परिभाषित करते हुए यह कह सकते हैं कि हम कान से जो कुछ भी सुनते हैं, वह ध्वनि है। मनुष्य की वागिंद्रियों के द्वारा उच्चरित ध्वनियों के लिखित रूप को **वर्ण** कहते हैं।

1.4 ध्वनि उच्चारण की प्रक्रिया (Speech Organs)

ध्वनि के उत्पादन की एक निश्चित प्रक्रिया होती है। ध्वनियों का उच्चारण वाग्यंत्रों की सहायता से होता है। ध्वनियों की उत्पत्ति का मूल आधार मनुष्य के मुख से श्वास के रूप में निकलने वाली प्राण–वायु है। शरीर के जो अवयव ध्वनि उत्पादन में सहायक होते हैं, उनके समूह को वाग्यंत्र या ध्वनि यंत्र कहते हैं। ध्वनि उत्पादन की प्रक्रिया को समझने के लिए वाग्यंत्र के विभिन्न अवयवों का ज्ञान आवश्यक है। इन उच्चारण अवयवों को गति के अनुसार दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं–

1. चल अवयव (Active Articulators)
2. अचल अवयव (Passive Articulators)

चल अवयव (Active Articulators)

उच्चारण अवयव में कुछ अवयव अपने स्थान पर स्थिर रहते हैं तथा कुछ अवयव गति करते हैं। सामान्यतया जो अवयव आगे–पीछे, ऊपर–नीचे, दाएं–बाएं गतिशील होते हैं, उन्हें चल अवयव कहते हैं। चल अवयव को उच्चारण के अनुसार गति देने पर स्पष्ट ध्वनि उत्पन्न होती है। इस प्रकार ओष्ठ, जिह्वा, निचला जबड़ा आदि चल अवयव के अंतर्गत आते हैं। निचला जबड़ा ऊपर नीचे गति करता है। ओष्ठ भी वृत्ताकार, अर्द्धवृत्ताकार आदि आकृतियाँ धारण करता है। जिह्वा को भी कई भागों में बाँटा जा सकता है, अग्र, मध्य एवं पश्च।

अचल अवयव (Passive Articulators)

अचल अवयव उन अवयवों को कहते हैं जो बिना गति के एक स्थान पर स्थिर रहकर ध्वनियों के उच्चारण को प्रभावित करते हैं। अचल अवयव वह स्थान होते हैं, जिनको जिह्वा स्पर्श करती है। अचल अवयवों को उच्चारण स्थान भी कहते हैं। दंत, तालु, मूर्धा, वर्त्स, कोमल तालु, कठोर तालु आदि अचल अवयव हैं। ध्वनियों के उच्चारण में प्रयोग होने वाले प्रमुख अचल अवयवों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

– (डॉ0 कपिलदेव, भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र पृष्ठ सं0–128)

चित्र परिचय

1. श्वास नली (Wind Pipe)
2. भोजन नली (Gullet / Food Pipe)
3. स्वर यंत्र (Larynx)
4. स्वर तंत्री (Vocal cord)
5. काकल (Glottis)
6. अभिकाकल (Epiglottis)
7. गलबिल/उपालिजिह्वा (Pharynx)
8. अलिजिह्वा/कौवा (Uvulaa)
9. नासाविवर (Nasal cavity)
10. कोमल तालु (Soft Palate)
11. मूर्धा (Cerebrum)
12. कठोर तालु (Hard Palate)
13. वर्त्स (Alveolus)
14. दंत (Teeth)
15. ओष्ठ (Lips)
16. जिह्वा नोक (Tip of the Tongue)
17. जिह्वा फलक (Blade of the Tongue)
18. जिह्वाग्र (Front of the Tongue)
19. जिह्वा मध्य (Middle of the Tongue)
20. जिह्वा पश्च (Back of the Tongue)

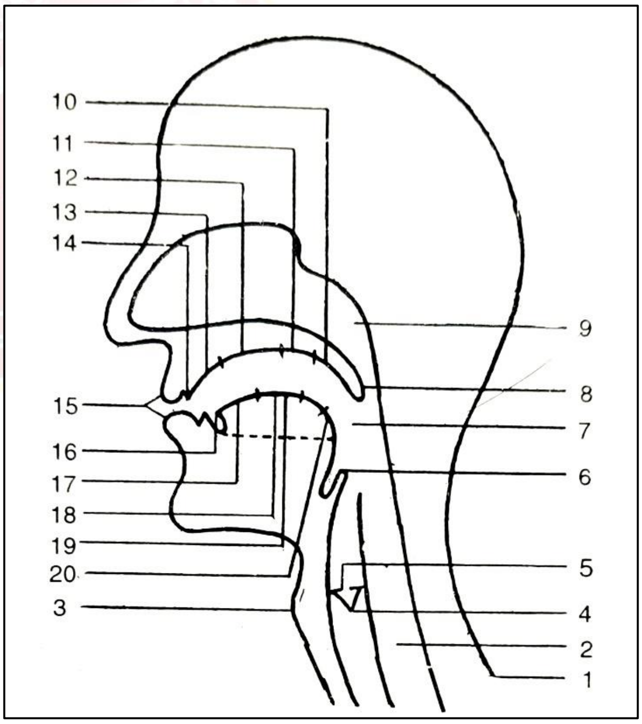

1.5 उच्चारण स्थान

ध्वनि विज्ञान के संदर्भ में, मुख विवर/वाग्यंत्र के अचल स्थानों को 'उच्चारण स्थान (Articulation Point) कहते हैं। गतिशील उच्चारण अवयव जब अचल ध्वनि मार्ग में बाधा डालते हैं तो विभिन्न ध्वनियों का उच्चारण होता है। प्रमुख उच्चारण स्थान हैं–

1. कंठ 2. तालु 3.मूर्धा 4. दंत 5. ओष्ठ 6. वर्त्स

1.6 उच्चारण प्रयत्न

ध्वनियों के उच्चारण में जो यत्न करना पड़ता है, उसे उच्चारण 'प्रयत्न' कहते हैं। यह ध्वनि भेद का प्रमुख आधार है। ध्वनि उच्चारण की प्रक्रिया में किया जाने वाला उच्चारण प्रयत्न निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं–

1. बाहृय प्रयत्न
2. आभ्यंतर प्रयत्न

1.7 ध्वनि के भेद

ध्वनि के दो भेद होते हैं–

1. स्वर
2. व्यंजन

1.8 स्वर

स्वर के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती है। ये स्वतंत्र होते हैं। इनके उच्चारण के समय वायु मुख से निर्बाध गति से बाहर निकलती है। हिन्दी में स्वरों की संख्या 11 है, जो इस प्रकार हैं–

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वरों के विभाजन का आधार एवं भेद– स्वरों के विभाजन का प्रमुख आधार निम्नलिखित है–

1. **प्रकृति के आधार पर**– प्रकृति के आधार पर स्वरों का विभाजन दो प्रकार से होता है–

   (क) मूल स्वर– मूल स्वर उन स्वरों को कहते हैं, जिनका उच्चारण एक श्वास में एक ही स्थान से होता है। जैसे – अ, इ, उ, ऋ।

   (ख) संयुक्त स्वर– संयुक्त स्वर दो स्वरों के मेल से निर्मित होते हैं। इनके उच्चारण में प्रयत्न एक ही होता है, किंतु उच्चारण स्थान दो होते हैं। इसमें दो स्वरों को संधि के द्वारा जोड़ा जाता है, जैसे– ए, ऐ, ओ, औ।

   अ + इ = ए　　　　अ + उ = ओ

   अ + ए = ऐ　　　　अ + ओ = औ

2. **मात्रा के आधार पर**– मात्रा के आधार पर स्वर के तीन भेद होते हैं–

   (क) ह्रस्व स्वर　　(ख) दीर्घ स्वर　　(ग) प्लुत स्वर

   (क) ह्रस्व स्वर– ह्रस्व स्वर को लघु स्वर भी कहते हैं। जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय या एक मात्रा का समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। जैसे– अ, इ, उ, ऋ।

   (ख) दीर्घ स्वर– दीर्घ स्वर को गुरु स्वर भी कहते हैं। जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगता हैं, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। जैसे– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(ग) प्लुत स्वर– वे स्वर जिनके उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय या तीन मात्राओं का समय लगता है, ऐसे स्वर, प्लुत स्वर कहे जाते हैं। इनका प्रयोग पुकारते समय, आलाप लेते समय, मंत्रों के उच्चारण में किया जाता है। हिन्दी में साधारणतः प्लुत स्वरों का प्रयोग नहीं होता है। वैदिक संस्कृत में इसका प्रयोग अधिक हुआ है। इसका कोई ध्वनि चिह्न नहीं होता। इसके लिए तीन (३) का अंक लगाया जाता है। जैसे– ओ३म्। इसे त्रिमात्रिक स्वर भी कहते हैं।

3. **जिह्वा के भाग के आधार पर–** स्वरों के उच्चारण में जिह्वा के अलग–अलग भाग का प्रयोग होता है। कुछ स्वरों के उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग कार्य करता है तो कुछ स्वरों के उच्चारण में मध्य भाग का प्रयोग होता है। इसी प्रकार कुछ स्वरों के उच्चारण में जिह्वा का पश्च अर्थात पीछे का भाग कार्य करता है। जैसे–

   (क) अग्र स्वर – इ, ई, ए. ऐ।
   (ख) मध्य स्वर –अ।
   (ग) पश्च स्वर – आ, उ, ऊ, ओ, औ।

4. **उच्चारण स्थान के आधार पर–** उच्चारण स्थान के आधार पर स्वरों का अलग–अलग विभाजन है। भिन्न–भिन्न स्वरों के उच्चारण में मुख के अलग–अलग भागों का प्रयोग होता है, जो इस प्रकार हैं–

   (क) कंठ – अ, आ।
   (ख) तालु – इ, ई।
   (ग) मूर्धा – ऋ।
   (घ) ओष्ठ – उ ऊ।
   (च) कंठ तालु– ए, ऐ।
   (छ) कंठ + ओष्ठ – ओ, औ।
   (ज) दाँत + ओष्ठ – व।

5. **ओष्ठों की आकृति के आधार पर**– ओष्ठों की आकृति के आधार पर स्वरों के दो भेद होते हैं–

   (क) वृत्तमुखी स्वर– जिन स्वरों के उच्चारण करने में ओष्ठ गोलाकार हो जाते हैं. उसे वृत्तमुखी स्वर कहते हैं। जैसे– उ, ऊ, ओ, औ, आ।

   (ख) अवृत्तमुखी स्वर– जिन स्वरों का उच्चारण करते समय ओष्ठ गोल न होकर मुख के दोनों ओर कुछ विस्तृत हो जाते हैं। वे स्वर, अवृत्तमुखी स्वर कहे जाते हैं। जैसे – अ, आ, ई, ए, ऐ।

6. **जिह्वा की ऊँचाई के आधार पर–** जिह्वा की ऊँचाई के आधार पर स्वरों को चार भागों में विभाजित किया गया है, जो इस प्रकार है–

   (क) संवृत स्वर– जिह्वा के ऊपर उठने पर जिह्वा और स्वर के बीच कम से कम स्थान खाली रहता है। इस प्रक्रिया में उच्चरित होने वाला स्वर संवृत स्वर कहलाता है। ये दो प्रकार के हैं–

   - ❖ अग्र संवृत स्वर – इ, ई।
   - ❖ पश्च संवृत स्वर – उ, ऊ।

   (ख) अर्द्ध संवृत स्वर – जब जीभ के ऊपर उठने पर स्वर सीमा के बीच संवृत की अपेक्षा स्थान कुछ अधिक खाली रहता है तब उत्पन्न होने वाले स्वर अर्द्ध संवृत कहे जाते हैं। ये दो प्रकार के है–

   - ❖ अग्र अर्द्ध संवृत– ए।
   - ❖ पश्च अर्द्ध संवृत– ओ।

(ग) विवृत स्वर –जब जीभ और स्वर सीमा के बीच में अधिक से अधिक स्थान खाली रहता है। तब विवृत स्वर उत्पन्न होता है। जैसे– आ

(घ) अर्द्ध विवृत– वे स्वर जिनका उच्चारण करने में मुख द्वार आधा खुला रहता है। वे अर्द्ध विवृत स्वर कहे जाते हैं। जैसे –

- अग्र अर्द्ध विवृत्त– ऐ।
- पश्च अर्द्ध विवृत – औ।

1.9 व्यंजन ध्वनियाँ

वे वर्ण जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, व्यंजन कहलाते हैं।
जैसे– क् + अ = क, ख् + अ = ख।

हिन्दी में व्यंजन वर्णों की संख्या 33 है, जिन्हें मुख्यतः तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है–

- स्पर्श व्यंजन (क से म तक)
- अन्तःस्थ व्यंजन (य, व, र, ल)
- ऊष्म व्यंजन (श, ष, स, ह)

व्यंजन ध्वनियों का वर्गीकरण– व्यंजन ध्वनियों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जा सकता है–

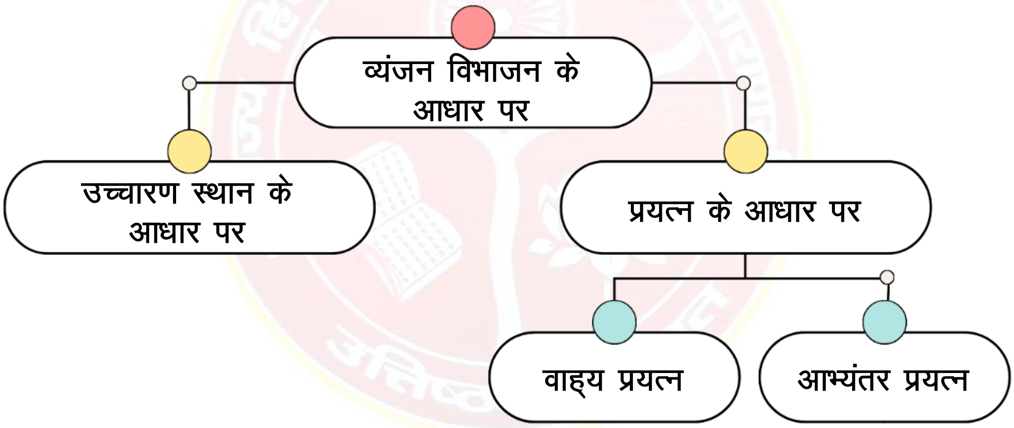

1. **उच्चारण स्थान के आधार पर**– उच्चारण स्थान के आधार पर व्यंजन के निम्नलिखित भेद किए जा सकते हैं–
   - कंठ्य या कोमल तालव्य
   - मूर्धन्य
   - तालव्य
   - दन्त्य
   - वर्त्स्य
   - दंतोष्ठ्य
   - ओष्ठ्य
2. **प्रयत्न के आधार पर** –प्रयत्न के आधार पर व्यंजन को दो भागों में विभाजित किया गया है–
   (क) आभ्यंतर प्रयत्न
   (ख) वाह्य प्रयत्न

(क) आभ्यंतर प्रयत्न –किसी वर्ण के उच्चारण के समय हमारी जिह्वा को मुख विवर में कंठ, तालु आदि विभिन्न स्थानों को छूने में जो प्रयत्न करना पड़ता है, उसे 'आभ्यंतर प्रयत्न' कहते हैं।

भेद– आभ्यंतर प्रयत्न पाँच प्रकार के हैं–

इनका विवरण इस प्रकार है–

- ❖ **स्पृष्ट**– 'क' वर्ग से लेकर 'प' वर्ग तक के सभी वर्ण स्पृष्ट प्रयत्न के अंतर्गत आते हैं, क्योंकि इन वर्णों के उच्चारण में जिह्वा का कण्ठ, तालु, मूर्धन्य आदि स्थानों पर पूरी तरह स्पर्श होता है।
- ❖ **ईषत् स्पृष्ट**– य. र, ल, व् का ईषत्–स्पृष्ट प्रयत्न होता है, क्योंकि अंतःस्थ वर्णों के उच्चारण के समय जिह्वा का कण्ठ, तालु आदि स्थानों पर थोड़ा स्पर्श होता है, पूरा नहीं।
- ❖ **विवृत**– सभी स्वर वर्णों का विवृत प्रयत्न होता है क्योंकि इनके उच्चारण में जिह्वा और मुख विवर के ऊपरी भाग के बीच अधिक दूरी रहती है।
- ❖ **ईषत्–विवृत**– ईषत् का अर्थ है– थोड़ा और विवृत का अर्थ है– खुला हुआ। अर्थात् जिन वर्णों के उच्चारण में जिह्वा को थोड़ा कम उठाना पड़ता है, उसे ईषत् विवृत कहते है। जैसे– श, ष, स, ह (उष्म लेखन) वर्णों का ईषत् विवृत प्रयत्न होता है।
- ❖ **संवृत**– संवृत का अर्थ है– ढका हुआ या बंद। इसमें वायु का मार्ग बंद रहता है। जैसे– 'अ' का उच्चारण संवृत प्रयत्न है।

(ख) वाह्य प्रयत्न– जब मुख से वर्ण का उच्चारण करते हैं उस समय उच्चारण करने की जो चेष्टा होती है उसे वाह्य प्रयत्न कहते हैं। वाह्य प्रयत्न तीन कारणों से होता है–

- ❖ स्वर तंत्रों के कुछ दूर रहने या निकट आ जाने से।
- ❖ फेफड़ों से निकलकर आने वाली वायु के अधिक या कम होने से।
- ❖ स्वर तंत्रों के कंपन की आवृत्ति में कमी या अधिकता होने से।

वाह्य प्रयत्न के भेद– ये 11 प्रकार के होते हैं–

वाह्य प्रयत्न के प्रमुख भेदों का विवरण इस प्रकार है–

(1) घोष– जिन व्यंजन वर्णों के उच्चारण में स्वरतंत्रियाँ झंकृत होती हैं या स्वरतंत्रियों में कंपन उत्पन्न होता है उन्हें 'घोष' कहते हैं। जैसे– सभी वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण, ङ, ढ, य, र, ल, व, ह।

(2) अघोष– जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरतंत्रियाँ झंकृत नहीं होतीं या उनमें कंपन उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें 'अघोष व्यंजन' कहते हैं। जैसे– सभी वर्गों के प्रथम, और द्वितीय वर्ण और श, ष, स।

(3) अल्पप्राण– जिन वर्णों के उच्चारण में मुख से श्वास कम मात्रा में निकलती है उन्हें 'अल्पप्राण' व्यंजन कहते हैं। जैसे– प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाचवाँ वर्ण तथा अंतस्थ व्यंजन य, र, ल, व अल्पप्राण व्यंजन कहलाते हैं।

(4) महाप्राण– जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास मुख से अधिक मात्रा में निकलती है, उन्हें 'महाप्राण' व्यंजन कहते हैं। जैसे– प्रत्येक वर्ग का द्वितीय और चतुर्थ वर्ण और ऊष्म व्यंजन श, ष, स, ह महाप्राण व्यंजन कहलाते हैं।

विशेष टिप्पणी

1. **पार्श्विक ध्वनि–** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा तालु को स्पर्श करे और प्राण वायु बगल या पार्श्व से निकल जाए, उसे पार्श्विक ध्वनि कहते हैं। जैसे– ल्।
2. **लुंठित ध्वनि–** जिन वर्णों के उच्चारण में जिह्वा दो से तीन बार कंपन करता है, उसे लुंठित या प्रकंपी व्यंजन कहते हैं। जैसे–र
3. **उत्क्षिप्त ध्वनि–** जिन वर्णों के उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग थोड़ा ऊपर उठकर झटके से नीचे गिरता है, उसे उत्क्षिप्त ध्वनियाँ कहते हैं। जैसे– ड़, ढ़।
4. **अद्र्ध स्वर–** जिन ध्वनियों के उच्चारण में उच्चारण अवयवों में कहीं भी पूर्ण स्पर्श नहीं होता है और श्वास निर्बाध रूप से निकलती है, उसे अद्र्ध स्वर कहते हैं। जैसे– य, व
5. **अयोगवाह–** ऐसे वर्ण जो न तो पूर्ण रूप से स्वर होते हैं और न ही पूर्ण रूप से व्यंजन होते हैं, अयोगवाह कहलाते हैं। अं और अः अयोगवाह हैं।
6. **अनुस्वार (ं)–** यह स्वर के बाद आने वाला व्यंजन है, जिसकी ध्वनि नाक से निकलती है । जैसे– अंगूर, अंगद आदि।
7. **अनुनासिक (ँ)–** जिन स्वरों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से किया जाता है, अनुनासिक कहलाते हैं। जैसे– गाँव, दाँत।

हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी में ध्वनियों (वर्ण) की संख्या 52 है। जो इस प्रकार हैं–

स्वर (11)
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

अयोगवाह (02)
अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग)

व्यंजन–स्पर्श व्यंजन (25)
क वर्ग– कण्ठव्य– क, ख, ग, घ, ङ
च वर्ग– तालव्य– च, छ, ज, झ, ञ
ट वर्ग– मूर्धन्य– ट, ठ, ड, ढ, ण
त वर्ग– दन्त्य – त, थ, द, ध, न
प वर्ग– ओष्ठ्य – प, फ, ब, भ, म

अन्तस्थ व्यंजन (04)
य, र, ल, व

उष्म व्यंजन (04)
श, ष, स, ह

संयुक्त व्यंजन (04)
क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

उत्क्षिप्त/द्विगुण (02)
ड़, ढ़

योग
52

गतिविधि–1

गतिविधि का नाम : सुनो, बोलो और लिखो

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : घंटी, कागज, बर्तन

उद्देश्यः विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना

हम अपने आस–पास के परिवेश में विभिन्न ध्वनियों को सुनते हैं। यथा– घंटी की ध्वनि, कागज मोड़ने की ध्वनि, बरतन गिरने की ध्वनि, बादलों के गरजने की ध्वनि, मूसलाधार बारिश की ध्वनि, तेज हवाओं की ध्वनि, मोटर गाड़ियों की ध्वनि आदि। आप सभी ने अलग–अलग ध्वनियों को सुना होगा।

प्रश्न 1. क्या आप इन ध्वनियों का उच्चारण कर सकते हैं?
प्रश्न 2. क्या आप इन ध्वनियों को लिख सकते हैं?
प्रश्न 3. क्या आप इन ध्वनियों में अंतर स्पष्ट कर सकते हैं?
प्रश्न 4. उपर्युक्त ध्वनियों में कौन सी ध्वनि आपको सबसे अच्छी लगती है?

मूल्यांकन– उपर्युक्त गतिविधियों से स्पष्ट होता है कि हम वस्तुओं के टकराने की ध्वनि, घण्टी और अन्य ध्वनियों को सुनते हैं, किंतु उन्हें बोलना, पढ़ना और लिखना संभव नहीं है। उपर्युक्त ध्वनियाँ भाषायी दक्षताओं के सापेक्ष निरर्थक हैं।

गतिविधि–2

गतिविधि का नाम : सुनो और लिखो

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : चार्ट पेपर, मार्कर

उद्देश्यः विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना

प्रशिक्षक कक्षा के प्रशिक्षुओं को दो समूहों में बाँट कर उनमें से एक समूह को कुछ शब्दों को बोलने के लिए कहेंगे और दूसरे समूह को उन शब्दों को सुनकर लिखने के लिए कहेंगे।

समूह एक द्वारा उच्चारित शब्द	समूह दो द्वारा सुनकर लिखा गया शब्द	शुद्ध शब्द
1. महेन्द्र	1. महेन्द्र	1. महेन्द्र
2. अस्नान	2. अस्नान	2. स्नान
3. श्वनज	3. श्वनज	3. स्वजन
4. कैलाश	4. कैलाश	4. कैलाश
5. परीच्छा	5. परीच्छा	5. परीक्षा
6. गाइका	6. गाइका	6. गायिका

भाषायी दक्षताओं (सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने) के विकास में उच्चारण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। हिन्दी भाषा की लिपि की विशेषता है कि जैसा हम बोलते हैं, वैसा ही लिखते भी हैं और जैसा लिखते हैं वैसा ही पढ़ते भी हैं। इसलिए भाषायी दक्षताओं के विकास में उच्चारण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इस गतिविधि में समूह एक द्वारा शुद्ध उच्चारण करने पर समूह दो द्वारा शुद्ध लिखा गया। लेकिन कुछ शब्दों का अशुद्ध उच्चारण करने पर उन शब्दों को समूह दो द्वारा अशुद्ध लिखा गया।

बोध परीक्षण

प्रश्न 1. स्वर और व्यंजन में अंतर स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न 2. स्वरों के वर्गीकरण के विभिन्न आधारों का उल्लेख कीजिए।
प्रश्न 3. व्यंजन को परिभाषित करते हुए स्पर्श व्यंजन का उल्लेख कीजिए।
प्रश्न 4. पार्श्विक और लुंठित ध्वनियों में अंतर बताइए।
प्रश्न 5. अंतःस्थ व्यंजनों का उल्लेख कीजिए।
प्रश्न 6. अनुस्वार एवं अनुनासिक ध्वनियों पर आधारित 10–10 शब्दों की सूची बनाइए।

समेकन

भाषा के आधारभूत तत्त्व के रूप में ध्वनि और उसके उच्चारण का विशिष्ट महत्त्व है। बच्चों के भाषा कौशल विकास में ध्वनि को सुनकर समझना एवं उसका शुद्ध उच्चारण नींव का कार्य करता है। ध्वनि उच्चारण की प्रक्रिया में सामान्य ध्वनियों एवं मानव वाग्यंत्र द्वारा प्रसूत ध्वनियों के मध्य अंतर कर पाने की क्षमता का विकास मानवीय भाषा के उच्चतर सोपान सीख पाने का प्रथम पड़ाव है। वाग्यंत्र के विविध अंगों के कार्यों की समझ बच्चों को ध्वनियों के उच्चारण एवं उनके विभेदीकृत होने की प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से समझने में मदद करता है। व्याकरणात्मक तथ्यों पर हिन्दी भाषा की कुल 52 ध्वनियों को विभिन्न आधारों पर विभाजित किया गया है और यह हिन्दी वर्णमाला की वैज्ञानिकता को प्रमाणित करता है। शुद्ध उच्चारण भाषा के मानकीकृत व्यवहार को बढ़ाता है तथा शब्दों के सही अर्थ तक पहुँचने में मदद करता है।

स्व आकलन

1. उच्चारण स्थान की दृष्टि से कौन सा विकल्प शुद्ध है?
   (क) श– मूर्धन्य (ख) स– दन्त्य (ग) च– कंठ्य (घ) ष – तालव्य
2. निम्नलिखित में से कौन सा कथन अशुद्ध है?
   (क) दो महाप्राण व्यंजनों का उच्चारण एक साथ हो सकता है।
   (ख) हिन्दी में ज्ञ का उच्चारण परम्परा से भिन्न हो गया है।
   (ग) 'क्ष' संयुक्त व्यंजन है।
   (घ) विसर्ग कंठ्य वर्ण है।
3. **व** वर्ण का उच्चारण स्थान है–
   (क) कंठोष्ठ (ख) दंतोष्ठ (ग) कंठतालु (घ) अनुनासिक
4. निम्नलिखित में से कौन–सा संयुक्त व्यंजन नहीं है?
   (क) य (ख) क्ष (ग) त्र (घ) ज्ञ
5. जिन वर्णों का उच्चारण दाँतों की सहायता से होता है, उन्हें क्या कहते हैं?
   (क) कंठ्य (ख) दंत्य (ग) मूर्धन्य (घ) अनुनासिक
6. निम्नलिखित में से कौन–सा 'ऊष्म व्यंजन' है?
   (क) श–ष–स (ख) अ–ब–द (ग) च–छ–ज (घ) य–र–ल

7. अद्र्ध स्वर हैं–
   (क) य, व (ख) इ, उ (ग) ऋ, लृ (घ) ऋ, ष
8. **ट** वर्ग में किस प्रकार के व्यंजन हैं?
   (क) कंठ्य (ख) तालव्य (ग) मूर्धन्य (घ) दन्त्य
9. **घ** का उच्चारण स्थान है–
   (क) मूर्धा (ख) कंठ (ग) तालु (घ) दंत/दाँत
10. **क्ष** वर्ण किसके योग से बना है?
   (क) क्+ष (ख) क्+च (ग) क्+छ (घ) क्+श
11. इनमें से 'ओ' का उच्चारण–स्थल है–
   (क) ओष्ठ (ख) मूर्धा (ग) तालु (घ) कण्ठोष्ठ
12. हिन्दी शब्दकोश में 'क्ष' का क्रम किस वर्ण के बाद आता है?
   (क) क (ख) ह (ग) छ (घ) व

विचार विश्लेषण

1. किन–किन व्यंजन वर्णों के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग होता है?
2. ऊष्म/संघर्षी व्यंजन को उदाहरण सहित स्पष्ट करें।
3. हिन्दी वर्णमाला में व्यंजनों की संख्या कितनी है?
4. अंतःस्थ वर्ण कौन–कौन से हैं?
5. 'ज्ञ' किन वर्णों के योग से बना है?
6. स्पर्शी व्यंजन किसे कहते हैं?
7. स्पर्शी व्यंजनों की संख्या कितनी है?
8. अनुनासिक स्वर को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए?
9. ऊष्म व्यंजनों का उल्लेख कीजिए।
10. उत्क्षिप्त व्यंजन कौन–कौन से हैं?

एक या अधिक ध्वनियों (या वर्णों) की उच्चारण की दृष्टि से अव्यवहित इकाई, जिसका उच्चारण एक झटके में किया जा सके, अक्षर है।
– भोलानाथ तवारी (भाषाविज्ञान, 1961, पृष्ठ 354)

"ध्वनतीति ध्वनिः" अभिनव गुप्त
अर्थात
जो ध्वनित हो, वह ध्वनि है।

इकाई 2

देवनागरी लिपि के समस्त लिपि संकेतों, स्वर, व्यंजन, संयुक्त वर्ण, संयुक्ताक्षर, मात्राओं का ज्ञान

2.1- लिपि
2.2- देवनागरी लिपि की विकास यात्रा
2.3- देवनागरी लिपि का नामकरण
2.4- देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता
2.5- देवनागरी लिपि संकेत (वर्ण)

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. देवनागरी के लिपि संकेतों को पहचान लेते हैं।
2. स्वर और व्यंजन के भेदों को स्पष्ट कर लेते हैं।
3. मात्राओं का समुचित प्रयोग कर लेते हैं।
4. वर्णों का शुद्ध उच्चारण एवं लेखन कर लेते हैं।
5. संयुक्त वर्ण एवं संयुक्ताक्षरों की संरचना को समझ लेते हैं एवं तदनुरूप उच्चारण भी कर लेते हैं।
6. हिन्दी वर्णमाला के अध्यापन में विभिन्न रोचक गतिविधियों का प्रयोग कर लेते हैं।

2.1 लिपि

जन्म के तुरंत बाद से ही बच्चा निरर्थक ध्वनियों का उच्चारण आरंभ कर देता है। फिर धीरे–धीरे सरल शब्दों का उच्चारण करने लगता है। इसके बाद कंकड़ इत्यादि की सहायता से दीवार अथवा जमीन पर आड़ी–तिरछी रेखाएँ खींचना शुरू करता है। ठीक इसी प्रकार लिपि का आविष्कार मौखिक भाषा विकास के पश्चात् हुआ है। भाषा में निहित ज्ञान को चिरकाल तक संचित एवं सुरक्षित रखने के लिए लिपि की आवश्यकता महसूस हुई। इस क्रम में मानव ने चित्रों के माध्यम से अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त करना प्रारंभ किया। कालांतर में लेखन में सरलता, श्रम एवं समय की बचत को ध्यान में रखते हुए मानव ने चित्रों की जगह संकेतों का प्रयोग करना शुरू किया। चित्रों अथवा संकेतों के माध्यम से मौखिक भाषा में निहित भावनाओं एवं विचारों को व्यक्त करने की व्यवस्था को 'लिपि' कहते हैं। लिपि का शाब्दिक अर्थ है– लिखावट/लिखने का ढंग/लिखने की रीति।

चित्रों के द्वारा भाषागत भावनाओं अथवा विचारों को व्यक्त करने की व्यवस्था को 'चित्रात्मक लिपि' कहते हैं। जैसे–हड़प्पा लिपि, मेसोपोटामिया की लिपि, प्राचीन मिस्र की लिपि। ठीक उसी प्रकार संकेतों के माध्यम से भाषागत भावनाओं अथवा विचारों को व्यक्त करने की व्यवस्था को 'अक्षरात्मक लिपि' कहते हैं क्योंकि लिपि संकेतों को 'वर्ण अथवा अक्षर' भी कहते हैं। देवनागरी लिपि, अक्षरात्मक लिपि का एक प्रमुख उदाहरण है।

> "देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है।"
> – महावीर प्रसाद द्विवेदी

गतिविधि–1

गतिविधि का नाम : पहचानो और लिखो

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : गेंद, फूल, फल, कलम अथवा बच्चों से सुपरिचित कोई भी सुलभ वस्तु।

उद्देश्य: विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षक कक्षा–कक्ष में गेंद, कलम अथवा फल दिखाकर बच्चों से प्रश्न पूछेंगे–

प्रश्न– यह क्या है?

......**संभावित उत्तर**

प्रशिक्षक बच्चों से उनके द्वारा दिए गए उत्तरों को पुस्तिका में लिखने को कहेंगे।
इसके बाद प्रशिक्षक बच्चों से कुछ प्रश्न पूछेंगे–

प्रश्न– इन शब्दों को जिसे आपने लिखा है, इस लिखावट को क्या कहते हैं?
......संभावित उत्तर

प्रश्न– क्या आप इस लिखावट/लिपि के विषय में जानते हैं?

गतिविधि–2

गतिविधि का नाम : ध्वनियाँ एक लिपि अनेक

समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : फ्लैश कार्ड।
उद्देश्य: विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

- प्रशिक्षु कुछ शब्दों (अंग्रेजी एवं हिन्दी) को फ्लैश कार्ड पर लिखकर लाएँगे।
- उन शब्दों का उच्चारण प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं के मध्य कक्षा–कक्ष में करेंगे।
- प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को भी उन शब्दों का उच्चारण करने हेतु निर्देशित करेंगे।
- प्रशिक्षक इन शब्दों को प्रशिक्षुओं को हिन्दी(देवनागरी) एवं अंग्रेजी (रोमन) में लिखने हेतु निर्देश देंगे।

नाम की सारिणी

कमल	KAMAL
प्रिया	PRIYA
सारिका	SARIKA
चिरंतन	CHIRANTAN
....	....
....	....

- प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को स्पष्ट करेंगे कि उच्चरित ध्वनियों को प्रतीकों में लिखने को लिपि कहते हैं।
- एक ही ध्वनि विभिन्न लिपियों में अलग–अलग प्रतीकों में लिखी जाती है।

प्रशिक्षक स्पष्ट करेंगे की ध्वनियों को जिन चिह्नों के द्वारा लिखित रूप में परिवर्तित किया जाता है उन चिह्नों के समेकित रूप को लिपि कहते हैं। हिन्दी भाषा के लेखन में जिस लिपि का प्रयोग किया जाता है उसे देवनागरी लिपि कहते हैं। देवनागरी लिपि का प्रयोग मराठी, नेपाली और संस्कृत भाषाओं के लेखन में भी किया जाता है।

> "विश्व की कोई भी लिपि अपने वर्तमान रूप में नागरी लिपि के समान नहीं।"
>
> – चंद्रबली पांडेय

2.2 देवनागरी लिपि की विकास यात्रा

भारत में लिपि का विकास प्रायः अक्षरात्मक आधार पर हुआ है। देवनागरी लिपि के विकास क्रम को निम्नवत दर्शाया जा सकता है–

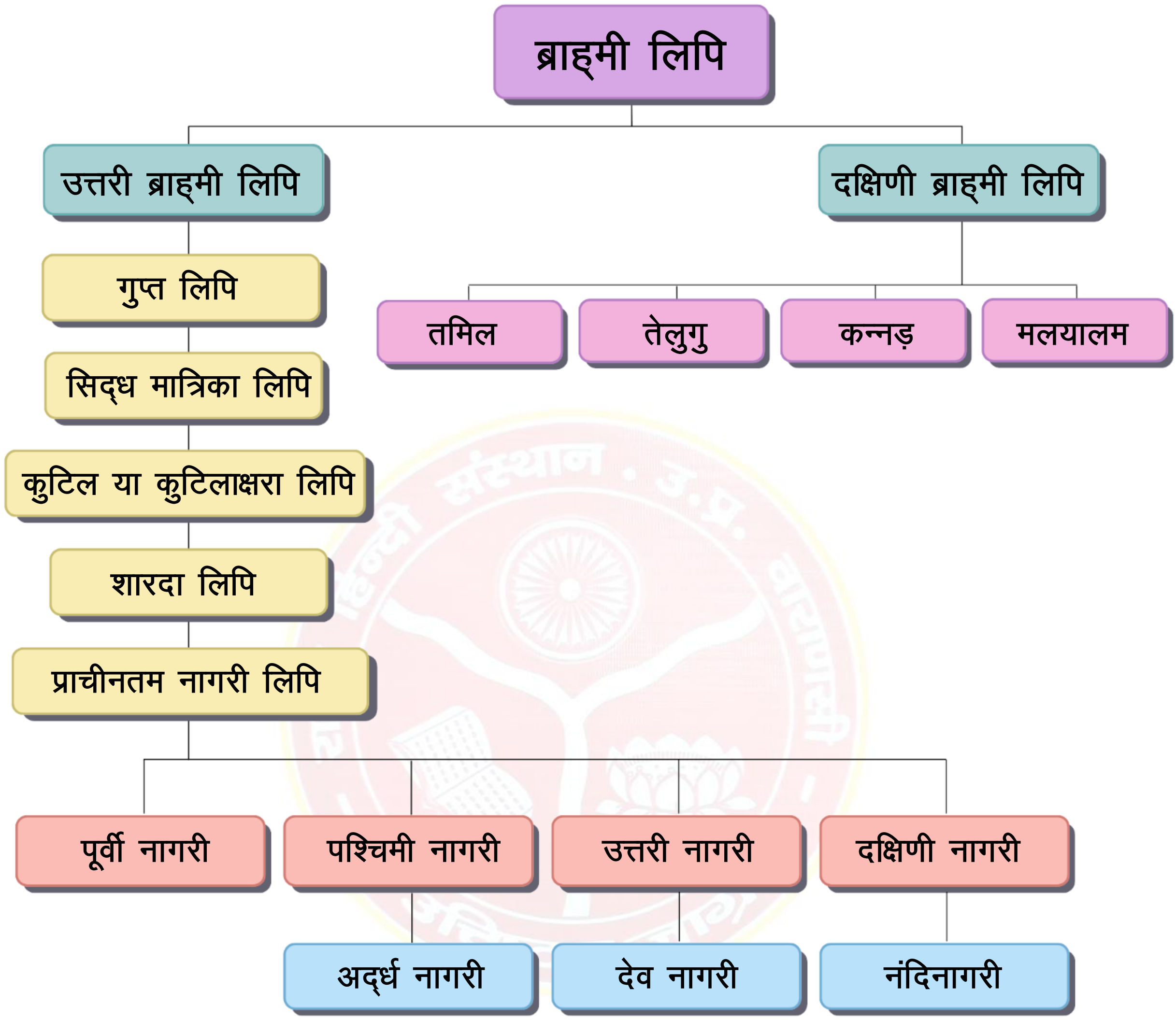

ब्राह्मी लिपि से पूर्व सिंधु घाटी की लिपि एवं खरोष्ठी लिपि भी प्रचलन में थी।

1. **सिंधु घाटी की लिपि–** सिंधु घाटी की लिपि कुछ चित्रात्मक एवं कुछ ध्वन्याक्षर लिए हुए होती है। इस लिपि के चिह्नों को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।

2. **खरोष्ठी लिपि–** खरोष्ठी लिपि का प्रचलन उत्तर भारत के अनेक पश्चिमी क्षेत्रों में 1000 ई० तक प्रचलित रहा। खर (गधे) के ओष्ठ जैसी ऊबड़–खाबड़ होने के कारण इसका नाम खरोष्ठी पड़ा। खरोष्ठी लिपि सम्राट अशोक महान के शासनकाल में मिलती है।

   इन दोनों लिपियों से देवनागरी लिपि का कोई सीधा संबंध नहीं है।

3. **ब्राह्मी लिपि–** देवनागरी लिपि का मूल स्रोत 'ब्राह्मी लिपि' है, जिसका आविष्कार 500 ई० पू० में हुआ था। यह मौर्य काल तक प्रचलन में रही।

डॉ0 राजबली पांडेय का मानना है कि ''ब्राह्मी का यह नाम ब्रह्म वाक्य (वेदों) के इस लिपि में सुरक्षित होने के कारण पड़ा।''

डॉ0 वूलर का मानना है कि ब्राह्मी लिपि, विदेशी लिपि है, जो उत्तरी सामी से विकसित हुई है।

ब्राह्मी लिपि के बहुत से अक्षर सिंधु घाटी की लिपि से मिलते हैं। गुप्त काल तक आते–आते ब्राह्मी लिपि के अक्षर गोलाकार होने लगे। गुप्तोत्तर काल में ब्राह्मी लिपि आधुनिक लिपियों के रूप में विकसित हुई। गुप्त काल में अक्षरों के ऊपर शिरोरेखा बनने लगी और स्वरों की मात्राएँ स्पष्ट होने लगीं। गुप्त काल के आरंभ में ब्राह्मी के दो भेद हो गए– उत्तरी ब्राह्मी और दक्षिणी ब्राह्मी। दक्षिणी ब्राह्मी से दक्षिण भारत की तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम आदि आधुनिक लिपियों का विकास हुआ। उत्तरी ब्राह्मी से सर्वप्रथम गुप्त लिपि प्रचलन में आयी। गुप्त लिपि से छठी शताब्दी में सिद्धमात्रिका लिपि आयी। यह कश्मीर से लेकर बॉसबसी तक प्रचलित रही। कालांतर में सिद्धमात्रिका ने टेढ़े–मेढ़े अक्षर होने के कारण कुटिलाक्षर लिपि के रूप में अपना क्षेत्र विस्तार किया। कुटिल लिपि गुजरात, महाराष्ट्र, कश्मीर, और मध्य में प्रचलित हुई। कुटिल लिपि को ही 'प्राचीन लिपि' भी कहा जाता है। 'कुटिल लिपि' आगे चलकर 'शारदा लिपि' कहलाई। 'शारदा लिपि' से ही कश्मीरी, डोंगरी, लहँदा, गुरुमुखी लिपि का विकास हुआ। इसी प्रकार कुटिल लिपि कैथी, बंगाली, उड़िया, असमियाँ, मैथिली, मणिपुरी भाषाओं की लिपियों की जननी के रूप में जानी जाती है।

वैसे कुटिल लिपि में क्रमशः चार लिपियों के भेदोपभेद विकसित होते हैं। इससे पूर्व में पूर्व–नागरी, पश्चिम में अर्द्ध–नागरी, दक्षिण में नंदिनागरी, मध्य देश या उत्तर में सामान्य नागरी अथवा देवनागरी का विकास हुआ।

2.3 देवनागरी लिपि का नामकरण

नवीं शताब्दी की देवनागरी का ही विकसित रूप आज की देवनागरी लिपि है। इसकी आदि मातृ–लिपि ब्राह्मी की तरह इसके नामकरण के संबंध में भी विद्वानों में मतभेद है।

कुछ लोग गुजरात के नागर ब्राह्मणों द्वारा प्रयुक्त किए जाने के कारण इसे नागरी कहते हैं और कुछ प्रारंभ में इसके नगरों में प्रचलन के कारण कुछ अन्य विद्वान बौद्ध ग्रंथ ललित विस्तर में प्रयुक्त नाग लिपि से इसका संबंध स्थापित करते हैं। कुछ विद्वान देव भाषा संस्कृत के इसमें लिखे जाने और प्राचीन नागरी से उद्भूत होने के कारण इसका नाम देवनागरी मानते हैं। एक अन्य मत तांत्रिक चिह्न देवनगर से इसके नाम को संबंधित करता है।

कुछ वर्ष पूर्व उपलब्ध एक नाटक के अनुसार पाटलिपुत्र की ख्याति 'नगर' नाम से भी थी और सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य की 'देव' नाम से ख्याति थी। यहाँ प्रचलित होने और सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य द्वारा प्रयुक्त होने के कारण यह लिपि देवनागरी कहलाई।

देवनागरी लिपि विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपियों में से एक है। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता के आधार निम्नवत हैं–

2.4 देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता

1. देवनागरी लिपि में एक ध्वनि के लिए एक ही लिपि–चिह्न है, जबकि रोमन लिपि में एक ही ध्वनि के लिए एक से अधिक लिपि–चिह्न हैं। जैसे– 'स' के लिए 'C', 'S' 'ज' के लिए G, J, S, Z आदि।
2. देवनागरी में एक लिपि–चिह्न से एक ही ध्वनि का बोध होता है और रोमन में एक से अधिक का। जैसे– C से 'स' और 'क', G से 'ज' और 'ग' आदि।

3. कुछ द्विरूप चिह्न अवश्य प्रचलित थे, पर अब उनका निराकरण करके एकरूपता निश्चित कर दी गई है, जैसे– **म–भ, ख–रव** आदि।
4. देवनागरी में प्रत्येक उच्चरित ध्वनि लिपि लिखी जाती है। प्रत्येक लिखी हुई ध्वनि उच्चरित होती है, परंतु रोमन में यह विशेषता नहीं है। Half–हाफ, Knife–नाइफ, Psychology –साइकोलॉजी में क्रमशः I, K और P मूकवर्ण हैं, जिनका उच्चारण यहाँ नहीं हो रहा है।
5. पूरी देवनागरी लिपि वर्णमाला, स्वर, व्यंजन, उच्चारण स्थान, प्रयत्न, घोषत्व और प्राणत्व के आधार पर पूर्णतः वैज्ञानिक रूप से व्यवस्थित है।
6. देवनागरी लिपि एक सुगम्य लिपि है जिसने विकास के अनुकूल अपने को पर्याप्त परिवर्धित व संशोधित किया है। आवश्यकतानुसार नई ध्वनियों के लिए व्यवस्था की गई है तो पुरानी अप्रयुक्त ध्वनियों के चिह्न हटा दिए गए हैं।
7. टंकण के लिए टाइपराइटर और कम्प्यूटर विकसित कर लिए गए हैं। देवनागरी लिपि को टंकण व कम्प्यूटर के अनुरूप बनाने के लिए पंचमाक्षरों की जगह अनुस्वार (अं) का प्रयोग किया जाने लगा है।
8. इसके वर्ण कलात्मक और सुरुचिपूर्ण हैं।

2.5 देवनागरी लिपि संकेत (वर्ण)

मौखिक भाषा की लघुतम इकाई 'ध्वनि' है। देवनागरी लिपि में प्रत्येक ध्वनि के लिए एक विशिष्ट लिपि संकेत है। इसी विशिष्ट लिपि संकेत को वर्ण भी कहते हैं।

दूसरे शब्दों में वर्ण भाषा की लघुतम अखंड इकाई को इंगित करने वाले लिपि संकेतों को कहते हैं।

वर्णमाला– वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिन्दी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण हैं।

वर्णों के प्रकार– वर्ण दो प्रकार के होते हैं–

1. स्वर
2. व्यंजन

स्वर– जो वर्ण बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता से स्वतंत्र रूप से उच्चरित होते हैं, उन्हें 'स्वर' कहते हैं। स्वरों की संख्या 11 है–

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

निर्देश– अं (अनुस्वार) और अः (विसर्ग) को अयोगवाह माना जाता है। अयोगवाह का तात्पर्य है– 'योग न होने पर भी जो साथ रहे' इस प्रकार अयोगवाह की गणना स्वरों में नहीं की जाती है किंतु उनको स्वरों के साथ ही रखा जाता है। अयोगवाह के संबंध में **किशोरीदास वाजपेयी** का कथन है कि– **''ये स्वर नहीं हैं और व्यंजनों की तरह स्वरों के पूर्व नहीं, पश्चात् आते हैं, अतः व्यंजन नहीं हैं।''**

अनुस्वार– जिसका उच्चारण केवल नाक से हो 'अनुस्वार' कहलाता है; जैसे– अं।

चूँकि यह स्पर्श व्यंजनों के पंचामाक्षरों (ङ, ञ, ण, न, म) के प्रतिस्थानी के रूप में प्रयुक्त होते हैं और इनका प्रयोग किसी स्वर के पश्चात किया जाता है। अतः इनकी गणना स्वरों के रूप में नहीं की जाती है।

अनुनासिक– जिन वर्णों के उच्चारण में मुख के साथ–साथ नासिका की भी सहायता लेनी पड़ती है, उन्हें 'अनुनासिक' कहते हैं। अनुनासिक के उच्चारण में नाक से बहुत कम साँस निकलती है और मुँह से अधिक। जैसे–काँच, पाँच, माँ इत्यादि।

विसर्ग–इसका उच्चारण कंठ से होता है। यह स्वर रहित 'ह्' के समान सुनाई देता है। इसका भी प्रयोग अनुस्वार की भाँति किसी अन्य स्वर के बाद होता है। अतः इन्हें भी स्वर नहीं माना जाता है।

स्वरों की मात्राएँ–स्वरों के कालमान (उच्चारण में लगने वाला समय) को मात्रा कहते हैं। जब स्वर, व्यंजनों के साथ संयुक्त होते हैं तो स्वरों का जो परिवर्तित रूप हमारे सामने आता है उसे ही मात्रा चिह्न कहते हैं। अ को छोड़कर शेष सभी स्वरों की मात्राएँ होती हैं। इस प्रकार मात्राओं की संख्या 10 होती है।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ

> भीमसेन शास्त्री एक मात्रा के समय को एक सेकेंड का समय मानते हैं।
>
> – (लघुसिद्धान्तकौमुदी)

> एकमात्रो भवेद् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
> त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यंजनं चार्ऽर्धमात्रिकम्।।
>
> – (लघुसिद्धान्तकौमुदी)

अर्थात् एकमात्रिक स्वर ह्रस्व कहे जाते हैं, द्विमात्रिक स्वर दीर्घ कहे जाते हैं, त्रिमात्रिक स्वरों को प्लुत स्वर एवं व्यंजनों की आधी मात्रा कही जाती है।

स्वरों के भेद– स्वरों के तीन भेद होते हैं–

1. ह्रस्व स्वर
2. दीर्घ स्वर
3. प्लुत स्वर

1. **ह्रस्व स्वर**– जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं क्योंकि इन्हीं से दीर्घ और संयुक्त स्वर बनते हैं। जैसे– अ, इ, उ, ऋ।
2. **दीर्घ स्वर**– जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। जैसे–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

निर्देश:

ए, ऐ, ओ, औ ऐसे स्वर हैं जो दीर्घ होने के साथ–साथ दो स्वरों के योग से बने हैं। अतः इन्हें संयुक्त स्वर भी कहते हैं–

अ + इ = ए
अ + ए = ऐ
अ + उ = ओ
अ + ओ = औ

3. **प्लुत स्वर**– जिन स्वरों के उच्चारण में तीन मात्रा या उससे भी अधिक का समय लगता है उन्हें 'प्लुत स्वर' कहते हैं। जैसे– ओऽम। ओऽम के उच्चारण में ओऽऽऽ का उच्चारण लंबा होता है। अतः यह प्लुत स्वर है।

इन्हें भी जानें

1. ह्रस्व 'इ' 'उ' के स्थान पर दीर्घ 'ई' 'ऊ' का उच्चारण और इसी प्रकार दीर्घ 'ई' 'ऊ' के स्थान पर ह्रस्व 'इ' 'उ' का उच्चारण प्रायः देखने में आता है; जैसे–हरि, कवि आदि शब्दों का हरी, कवी जैसा उच्चारण, गुरु, मधु आदि शब्दों का गुरू, मधू जैसा उच्चारण और पूज्य, मूल्य आदि शब्दों का पुज्य, मुल्य जैसा उच्चारण अशुद्ध है। इसलिए इन शब्दों का बार–बार अभ्यास कराया जाना चाहिए।
2. आजकल 'ऋ' का उच्चारण 'रि' के रूप में किया जाने लगा है किन्तु 'ऋ' का वास्तविक उच्चारण स्थान मूर्धा है। जिह्वा का मूर्धा से स्पर्श होने पर 'ऋ' का सही उच्चारण होता है। ऊपर वाले दाँतों के पीछे का भाग तालु और तालु के पीछे का भाग मूर्धा कहा जाता है।
3. 'ऐ' का उच्चारण 'अइ' जैसा और 'औ' का उच्चारण' 'अउ' जैसा किया जाता है, जिसे सुधारा जाना आवश्यक है। स्थानीय बोलियों के प्रभाव के कारण भी इस प्रकार का अंतर उत्पन्न हो जाता है। हम जैसा लिखते हैं, वैसा ही हमारा उच्चारण भी होना चाहिए। इसलिए पैसा के स्थान पर पइसा, मौज के स्थान पर मउज आदि उच्चारणों से बचना चाहिए।

व्यंजन– जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से ही संभव होता है, उन्हें 'व्यंजन' कहते हैं। ये मूल रूप से 33 हैं–

कंठ्य	क ख ग घ ङ
तालव्य	च छ ज झ ञ
मूर्धन्य	ट ठ ड ढ ण
दंत्य	त थ द ध न
ओष्ठ्य	प फ ब भ म
अंतःस्थ	य र ल व
ऊष्म	श ष स ह

उर्पयुक्त मूल व्यंजनों के इतर हिन्दी वर्णमाला में चार संयुक्त व्यंजनों को भी स्थान दिया गया है, जो निम्नवत हैं–

क्ष = क् + ष	अथवा	क् + ष् + अ
ज्ञ = ज् + ञ	अथवा	ज् + ञ् + अ
त्र = त् + र	अथवा	त् + र् + अ
श्र = श् + र	अथवा	श् + र् + अ

उच्चारण स्थान के आधार पर देवनागरी लिपि की ध्वनियों का भेद

वर्ण	स्थान	संदर्भ-वचनानि
1. अ,क,ख,ग,घ,ङ,ह, विसर्ग (:)	कण्ठ	1. अकुहविसर्जनीयानां कण्ठ :।
2. इ,च,छ,ज,झ,ञ,य,श	तालु	2. इचुयशानां तालु ।
3. ऋ,ट,ठ,ड,ढ,ण,र,ष	मूर्धा	3. ऋटुरषाणां मूर्धा ।
4. लृ,त,थ,द,ध,न,ल,स	दन्त	4. लृतुलसानां दन्ताः।
5. उ,प,फ,ब,भ,म,(≍प ≍फ)	ओष्ठ	5. उपूपध्मानीयानाम् ओष्ठौ।
6. ञ,म,ङ,ण,न	नासिका और स्ववर्गीय स्थान	6. ञमङणनानां नासिका च।
7. ए और ऐ	कण्ठ-तालु	7. एदैतोः कण्ठतालु।
8 ओ और औ	कण्ठ- ओष्ठ	8. ओदौतोः कण्ठोष्ठम्।
9. व	दन्तोष्ठ	9. वकारस्य दन्तोष्ठम्।
10. ≍ क, ≍ ख	जिह्वामूल	10. जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्।
11. अनुस्वार (ं)	नासिका	11. नासिका अनुस्वारस्य।

नोट– 'ड़' 'ढ़' ये दोनों हिन्दी के विकसित व्यंजन हैं। इनका प्रयोग संस्कृत में नहीं होता है। 'ड' 'ढ' के नीचे बिंदु लगाकर दो नये अक्षर 'ड़' और 'ढ़' बनाए गए हैं। इनकी मूल ध्वनि 'ड' और 'ढ' की ही है। दोहरी भूमिका में होने के कारण इन्हें **द्विगुण व्यंजन** कहते हैं। इनके उच्चारण में जिहवा तेजी से ऊपर से नीचे गिरती है अतः इन्हें **'उत्क्षिप्त व्यंजन'** भी कहते हैं।

व्यंजन के भेद

1. **स्पर्श व्यंजन–** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में जिहवा मुख के अलग–अलग स्थानों का स्पर्श करती हैं, वे 'स्पर्श व्यंजन' कहे जाते हैं। क से म तक इनकी संख्या 25 है। वर्ग के पहले अक्षर के आधार पर वर्ग का नाम निर्धारित है। जैसे– क वर्ग, च वर्ग इत्यादि।

क	ख	ग	घ	ङ	क–वर्ग
च	छ	ज	झ	ञ	च–वर्ग
ट	ठ	ड	ढ	ण	ट–वर्ग
त	थ	द	ध	न	त–वर्ग
प	फ	ब	भ	म	प–वर्ग

2. **अंतःस्थ व्यंजन–** जो व्यंजन स्वर और व्यंजनों के बीच में रहते हैं उन्हें 'अंतःस्थ व्यंजन' कहते हैं। इन व्यंजनों के उच्चारण में जिहवा की स्थिति ना तो स्पर्श व्यंजनों जैसी होती है और न ही स्वरों जैसी। ये संख्या में चार हैं– य, र, ल, व

य और व को 'अर्द्ध स्वर' भी कहते हैं।

3. **ऊष्म व्यंजन–** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण के दौरान मुख से ऊष्मा (गर्म वायु) निकलती है, उन्हें 'ऊष्म व्यंजन' कहते हैं। इनकी संख्या चार है–

श, ष, स, ह

4. **अल्पप्राण–** जिन वर्णों के उच्चारण में कम प्राण वायु निकलती हो; उन्हें 'अल्पप्राण' वर्ण कहते हैं। स्पर्श व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग के विषम स्थान (1, 3, 5) पर स्थित वर्ण एवं अंतःस्थ व्यंजन (य, र, ल, व) 'अल्पप्राण' वर्ण के उदाहरण हैं।
   जैसे– क, ग, ङ, च, ज, ञ इत्यादि।

5. **महाप्राण–** जिन वर्णों के उच्चारण में अधिक प्राण वायु निकलती हो; उन्हें 'महाप्राण' वर्ण कहते हैं। स्पर्श व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग के सम स्थान (2, 4) पर स्थित वर्ण एवं ऊष्म व्यंजन (श, ष, स, ह) 'महाप्राण' वर्ण के उदाहरण हैं।
   जैसे– ख, घ इत्यादि।

6. **अघोष–** जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कम कंपन उत्पन्न होता है; वे 'अघोष' वर्ण कहलाते हैं। स्पर्श व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग के प्रथम और द्वितीय वर्ण (1, 2) तथा ऊष्म व्यंजन (श, ष, स) अघोष वर्ण के उदाहरण हैं।
   जैसे– क, ख   च, छ   ट, ठ   त, थ   प, फ

7. **सघोष–**जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में अधिक कंपन उत्पन्न होता है, वे 'सघोष' वर्ण कहलाते हैं। स्पर्श व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग के अंतिम तीन वर्ण (3, 4, 5) एवं अंतःस्थ व्यंजन (य, र, ल, व तथा ऊष्म 'ह') सघोष वर्ण के उदाहरण हैं।
   जैसे– ग, घ, ङ   ज, झ, ञ   ड, ढ, ण   द, ध, न   ब, भ, म

ध्यातव्य– समस्त स्वर भी सघोष वर्ण के उदाहरण हैं।

8. **प्रकम्पित अथवा लुण्ठित व्यंजन–** जिन वर्णों के उच्चारण में जिह्वा में अत्यधिक कंपन उत्पन्न हो; उन्हें लुण्ठित या 'प्रकम्पित' वर्ण कहा जाता है। इसके उच्चारण के समय श्वास जिह्वा की नोक तक लुढ़कती हुई निकलती है।
   जैसे– र।

9. **पार्श्विक व्यंजन–** जब श्वास उच्चारण के समय जिह्वा के दोनों पार्श्वों से निकल जाए तो उसे 'पार्श्विक व्यंजन' कहते हैं।
   जैसे– ल।

विशेष (ध्यान देने योग्य)

- 'ङ' और 'ञ' को लिखते समय तो सही लिखा जाता है किन्तु बोलते समय इनके पहले क्रमशः 'अ' और 'इ' जोड़कर 'अङ' और 'इञ' उच्चारण प्रायः सुनने में आता है। निरंतर अभ्यास से इस त्रुटि को दूर किया जा सकता है।
- 'छ' 'च्छ' और 'क्ष' के उच्चारण में प्रायः अंतर नहीं किया जाता है। 'क्ष' के स्थान पर 'छ', 'छ' के स्थान पर 'क्ष' और 'च्छ' के स्थान पर 'छ' या 'क्ष' का उच्चारण सुनाई देता है। इन तीनों का अलग–अलग अभ्यास बच्चों को कराना चाहिए। छ–छात्र, छिद्र, छल, छात्रावास आदि। च्छ–अच्छा, स्वच्छ, तुच्छ, इच्छा आदि। क्ष–शिक्षक, कक्षा, क्षमा, रक्षा, वृक्ष आदि।

- 'ट' और 'ठ' का उच्चारण भी परस्पर बदल जाता है; जैसे—'मिष्टान्न' सही है किंतु 'मिष्ठान्न' प्रचलन में है, जिस पर ध्यान अपेक्षित है।
- इसी प्रकार बच्चे 'ण' के स्थान पर 'ड़' का, 'ड़' के स्थान पर 'ण' का और 'व' के स्थान पर 'ब' का उच्चारण कर बैठते हैं, जो शुद्ध नहीं है; जैसे—'गरुड़' के स्थान पर 'गरुण', 'गुण' के स्थान पर 'गुड़', 'वृक्ष' के स्थान पर 'बृक्ष' और 'वन' के स्थान पर 'बन' का उच्चारण करते हैं। इसमें सुधार कर शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जाना चाहिए है।
- 'श' 'ष' और 'स' के उच्चारण में प्रायः अशुद्धि देखी जाती है। 'स' का उच्चारण जिह्वा का दाँतों से स्पर्श होने पर होता है। इस कारण इस 'स' को 'दंत्य' कहा जाता है। ऊपर वाले दाँतों के पीछे का हिस्सा 'तालु' और उससे भी पीछे का हिस्सा 'मूर्धा' कहा जाता है। जब जिह्वा तालु का स्पर्श करती है तब तालव्य 'श' का और जब जिह्वा मूर्धा का स्पर्श करती है तब मूर्धन्य 'ष' का उच्चारण होता है। बच्चों को इसका निरंतर अभ्यास कराया जाना चाहिए।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : करें पहचान—उच्चारण स्थान

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : हिन्दी वर्णमाला का फ्लैश कार्ड।

उद्देश्य— विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

प्रशिक्षक हिन्दी वर्णमाला के वर्णों के फ्लैश कार्ड को यादृच्छिक क्रम में प्रशिक्षुओं के समक्ष प्रदर्शित करेंगे एवं एक—एक प्रशिक्षु से उनका उच्चारण स्थान बताने को कहेंगे। प्रशिक्षक प्रत्येक प्रशिक्षु के उत्तर को उनके नाम के साथ अंकित करता जाएगा। अंत में समस्त प्रशिक्षुओं के साथ प्रदत्त उत्तरों पर चर्चा करेगा।

बोध परीक्षण

1. हिन्दी में स्वरों की संख्या बताइए।
2. तालव्य व्यंजन वर्णों का उल्लेख कीजिए।
3. महाप्राण व्यंजन वर्णों का उल्लेख कीजिए।
4. तालु, महाप्राण एवं अघोष व्यंजन का उदाहरण लिखिये।
5. पार्श्विक व्यंजन कौन हैं?
6. उत्क्षिप्त व्यंजन कौन—कौन से हैं?
7. अल्पप्राण एवं महाप्राण को परिभाषित कीजिए।
8. स्पर्श व्यंजनों की संख्या कितनी है?
9. संयुक्त व्यंजन के तीन उदाहरण लिखिए।
10. प्लुत स्वर से आप क्या समझते हैं?
11. अर्द्ध स्वर कौन—कौन से हैं?
12. देवनागरी लिपि का विकास किस लिपि से हुआ है ?
13. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता के कम से कम तीन आधार बताइए।
14. देवनागरी लिपि के नामकरण पर प्रकाश डालिए।
15. दक्षिण भारतीय लिपियाँ ब्राह्मी के किस रूप से विकसित हुई हैं ?
16. खरोष्ठी लिपि के नामकरण के कारण पर प्रकाश डालिए।

समेकन

उर्पयुक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि देवनागरी लिपि विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपियों में से एक है। देवनागरी लिपि संकेतों में स्वरों एवं व्यंजनों को उनके उच्चारण स्थान, प्राणत्व एवं घोषत्व के आधार पर एक सुव्यवस्थित क्रम में हिन्दी वर्णमाला में स्थान दिया गया है। इस अध्याय में प्रदत्त गतिविधियों के समुचित प्रयोग से हम हिन्दी वर्णमाला को बच्चों को सिखा सकते हैं। हिन्दी वर्णों के उच्चारण में कुछ अशुद्धियाँ परंपरा से चली आ रही हैं जिनका संकेत इस अध्याय में किया गया है। यदि सावधानी पूर्वक अध्यापन किया जाए तो उन उच्चारण अशुद्धियों को दूर किया जा सकता है।

स्व आकलन

1. चित्र देखकर वर्णों को सुमेलित कीजिए एवं इन वर्णों को व्यंजन एवं स्वर के रूप में पहचानिए–

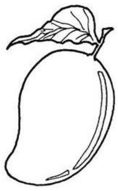

ग

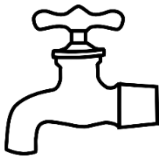

ऊ

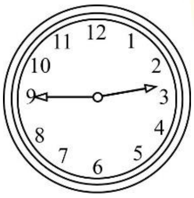

न

ऐ

घ

आ

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) अ वर्ण................................ स्वर है। (ह्रस्व/दीर्घ)
(2) ....का प्रयोग अयोगवाह के रूप में होता है। (ं/ः/ँ/ै)
(3) क... वर्ण है। (कंठ्य/तालव्य)
(4) देवनागरी लिपि की उत्पत्ति............................. लिपि से हुई है। (ब्राह्मी/खरोष्ठी)
(5) ....अंतःस्थ व्यंजन है। (य, र, ल, व/श, ष, स, ह)

3. सही शब्द छाँटकर वाक्य पूरा करें–

(1) सातवीं .... में दस बच्चे हैं। (कच्छा/कक्षा)
(2) ....उत्तम जीवन का आधार है। (परिश्रम/परिश्त्रम)
(3) ....में फूल लगे हैं। (कयारी/क्यारी)
(4) गाँव में अब भी कुछ ....घर होते हैं। (कच्चे/कचचे)
(5) आज हमारे विद्यालय में.. है। (छुट्‌टी/छूट्‌टी)

4. वर्णों को उचित क्रम में लगाकर सार्थक शब्द बनाइए।

शलक, तबोल, बकिता, सुनम, कारआ

5. दिए गए वर्णों से कम से कम 7 सार्थक शब्द बनाइए–

ल, म, प, इ, उ, च, त, प

6. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण विन्यास कीजिए–

(क) कमल
(ख) क्षत्रिय
(ग) आर्द्र
(घ) कविता
(च) सेब

7. निम्नलिखित शब्दों को प्रथम अक्षर में आए स्वर अथवा व्यंजन वर्ण के आधार पर अलग–अलग कीजिए–

देवनागरी, गुजराती, अनार, अखबार, इमला, ऐनक, औसत, घर, शिक्षक, सहयोग, प्रतीत।

8. सुमेलित कीजिए–

(क) अयोगवाह	(क) क – स
(ख) क् + ष	(ख) ड़, ढ़
(ग) स्वर	(ग) ढ
(घ) दंत्य वर्ण	(घ) अं, अः
(च) उत्क्षिप्त वर्ण	(च) क्ष
(छ) मूर्धन्य वर्ण	(छ) ऋ

9. दिए गए अंश में अनुस्वार, संयुक्त व्यंजन तथा संयुक्ताक्षर खोज कर लिखिए–

बंदर (सफेद बिल्ली से)– बोलो, तुम्हें क्या कहना है?
सफेद बिल्ली– श्रीमान् जी, रोटी पहले मैंने ही देखी थी, इसलिए रोटी पर पूरा अधिकार मेरा है।
बंदर (काली बिल्ली से)– बोलो, तुमको अपने पक्ष में क्या कहना है?

10. **नीचे दिए गए चित्रों के प्रथमाक्षरों पर सही का निशान (✓) लगाइए–**

म / ल

च / द

ल / ग

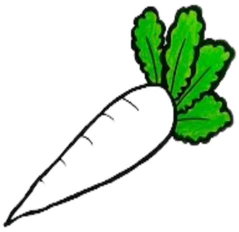

ल / म

स / ख

क्ष / प

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मूल स्वर है –
(क) आ / ई / उ (ख) अ / इ / उ / ऋ (ग) ए / ए / ओ (घ) अं / अः

2. श, ष, स, ह व्यंजन कहलाते हैं–
(क) ऊष्म (ख) अंतःस्थ (ग) संयुक्त (घ) द्विगुण

3. 'ब' वर्ण का उच्चारण स्थल है–
(क) तालु (ख) कंठ (ग) मूर्धा (घ) ओष्ठ

4. य वर्ण है –
(क) उत्क्षिप्त (ख) अंतःस्थ (ग) संयुक्त (घ) ऊष्म

5. ज्ञ वर्ण किन वर्णों के संयोग से बना है–
(क) ज+ञ (ख) ज्+ञ (ग) ग+य् (घ) ग+य

6. अंतःस्थ व्यंजनों की संख्या है–
(क) दो (ख) चार (ग) तीन (घ) छः

7. स्पर्श व्यंजनों की संख्या है –
(क) 24 (ख) 33 (ग) 25 (घ) 51

8. लिखित भाषा की सबसे छोटी इकाई है–
(क) वाक्य (ख) पद (ग) शब्द (घ) वर्ण

9. अयोगवाह है–
(क) संयुक्त व्यंजन (ख) अल्पप्राण (ग) महाप्राण (घ) विसर्ग और अनुस्वार

10. 'श' का उच्चारण स्थल है –
(क) ओष्ठ (ख) कण्ठ्य (ग) तालु (घ) दन्त

11. 'इ' तथा 'ई' वर्ण है –
(क) व्यंजन (ख) अदर्ध स्वर (ग) संयुक्त स्वर (घ) स्वर

12. हिन्दी भाषा में वर्णों की संख्या है–

(क) 55 (ख) 52 (ग) 50 (घ) 48

13. वर्णमाला का आशय है –

(क) शब्दों के समूह से
(ख) वर्णों के संकलन से
(ग) वर्णों के व्यवस्थित समूह से
(घ) शब्द रचना से

14. देवनागरी की विशेषता से संबंधित नहीं है–

(क) जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है।
(ख) एक वर्ण से दूसरे का भ्रम नहीं होता।
(ग) शिरोरेखा का प्रयोग अनावश्यक, केवल अलंकरण के लिए।
(घ) एक वर्ण संकेत से अनिवार्यतः एक ही ध्वनि व्यक्त होती है।

15. देवनागरी लिपि की सबसे बड़ी विशेषता है–

(क) हिन्दी भाषा की लिपि होना।
(ख) प्राचीन लिपि होना।
(ग) अनेक भारतीय विषयों की लिपि होना।
(घ) सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि होना, एक ध्वनि के लिए एक संकेत होना।

विचार विश्लेषण

1. अशुद्ध उच्चारण के कौन–कौन से कारण हैं?
2. अयोगवाह से आप क्या समझते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।
3. संयुक्त स्वर किसे कहते हैं ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
4. व्यंजन किसे कहते हैं ? अंतस्थ व्यंजन के उदाहरण लिखिए।
5. संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र, ज्ञ एवं श्र किन–किन वर्णों से मिलकर बने हैं?
6. ऊष्म व्यंजन किसे कहते हैं? सोदाहरण लिखिए।
7. देवनागरी लिपि की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

प्रोजेक्ट कार्य

1. चार्ट पेपर पर स्वर वर्गीकरण एवं व्यंजन वर्गीकरण की तालिका बनाएँ।
2. देवनागरी के लिपि संकेतों का चार्ट बनाइए।
3. मात्राओं के लिए मॉडल बनाइए।

> **"समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।"**
>
> – जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

इकाई 3
विलोम, समानार्थी, तुकांत एवं समान ध्वनियों वाले शब्दों की पहचान

3.1- शब्द
3.2- शब्द के भेद
3.3- विलोम शब्द
3.4- तुकांत शब्द
3.5- समान ध्वनि वाले शब्द
3.6- समानार्थी शब्द

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु विलोम, समानार्थी, समान ध्वनि वाले शब्दों को समझ लेते हैं।
2. तुकांत शब्दों की पहचान एवं प्रयोग कर लेते हैं।
3. विविध संदर्भों में विलोम, समानार्थी, तुकांत एवं समान ध्वनियों वाले शब्दों का उचित प्रयोग कर लेते हैं।

भाषा ध्वनि पर आधारित व्यवस्था होती है। ध्वनियाँ वर्ण विन्यास पर निर्भर करती हैं। वर्ण अथवा अक्षर सार्थक शब्द बनाते हुए वाक्य में प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार वर्णों से बने हुए सार्थक शब्द, भाषा के सीखने के साथ–साथ सिखाने का साधन बनते हैं। हिन्दी शब्द की विविध कोटियाँ हैं। यथा– समान ध्वनियों वाले शब्द या समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द, तुकांत शब्द, समानार्थी शब्द और विलोम शब्द। इन उपर्युक्त शब्द कोटियों की अवधारणात्मक समझ एवं प्रयोग ही इस इकाई का मुख्य उद्देश्य है।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षक विलोम शब्द की अवधारणा की समझ विकसित करने हेतु संबंधित चार्ट, फ्लैश कार्ड आदि का प्रयोग करेंगे।
2. प्रशिक्षक समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द की समझ विकसित करने हेतु संबंधित चार्ट, शब्द–सूची, कविता आदि का प्रयोग करेंगे।
3. प्रशिक्षक समानार्थी शब्द की अवधारणा की समझ विकसित करने हेतु समानार्थी शब्दों के कार्ड, चार्ट, तालिका आदि का प्रयोग करेंगे।
4. प्रशिक्षक तुकांत शब्द की समझ एवं भाषा में इसकी उपयोगिता बताने हेतु तुकांत शब्द से संबंधित शब्द–सूची, कविता आदि का प्रयोग करेंगे।

प्रशिक्षुओं के लिए निर्देश

1. प्रशिक्षु विलोम शब्द की अवधारणा की समझ विकसित करने हेतु विलोम शब्द से संबंधित चार्ट, फ्लैश कार्ड आदि का कक्षा कक्ष में अभ्यास करेंगे एवं बच्चों से करवाएँगे।
2. प्रशिक्षु समोच्चरित भिन्नार्थक शब्दों की समझ विकसित करने हेतु संबंधित चार्ट, शब्द–सूची, कविता आदि का पठन करते हुए अभ्यास करेंगे एवं बच्चों से करवाएँगे।
3. प्रशिक्षु तुकांत शब्दों की समझ एवं भाषा में इसकी उपयोगिता बताने हेतु संबंधित शब्द–सूची, कविता आदि संग्रहीत कर तुकांत शब्द चिह्नित कर सूची बनवाएँगे।
4. प्रशिक्षु समानार्थी शब्दों की समझ विकसित करने के लिए समानार्थी शब्दों के कार्ड, चार्ट, तालिका आदि का प्रयोग बच्चों से करवाएँगे।

प्रस्तुतीकरण

3.1 शब्द

एक या अधिक वर्णों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि शब्द कहलाती है; जैसे– ज् + अ + ल् + अ = जल, न् + अ + ल् + अ = नल

यहाँ पर ज् + अ + ल् + अ चार वर्ण हैं, चारों को जोड़कर एक शब्द बना जल। इसी तरह नल शब्द का भी निर्माण हुआ। हिन्दी भाषा में विविध सन्दर्भों में एक वर्ण भी कभी–कभी एक शब्द के रूप में अर्थ प्रदान करता है; जैसे– एक वर्ण से निर्मित शब्द– न (नहीं), व (और) आदि।

3.2 शब्द के भेद

(क) उत्पत्ति के आधार पर–

1. तत्सम शब्द
2. तद्भव शब्द
3. देशज शब्द
4. विदेशी शब्द
5. संकर शब्द

(ख) रचना के आधार पर–

1. रूढ़ शब्द
2. यौगिक शब्द
3. योगरूढ़ शब्द–

(ग) प्रयोग के आधार पर–

1. विकारी शब्द
2. अविकारी या अव्यय शब्द

(घ) अर्थ के आधार पर–

1. एकार्थी शब्द
2. अनेकार्थी शब्द
3. पर्यायवाची शब्द
4. विलोम शब्द
5. समोच्चरित शब्द–युग्म
6. शब्द समूह के लिए एक शब्द
7. समानार्थक प्रतीत होने वाले भिन्नार्थक शब्द
8. समूहवाची शब्द
9. ध्वन्यार्थक शब्द

राज्य हिन्दी संस्थान • उ.प्र. वाराणसी • प्रतिष्ठित जाग्रत

3.3 विलोम शब्द

गतिविधि

गतिविधि का नाम : जोड़े मिलाओ

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : भिन्न प्रकृति वाले कुछ वस्तुओं के फ्लैश कार्ड।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षक भिन्न प्रकृति वाली कुछ वस्तुओं या पदार्थों को प्रस्तुत करेंगे। प्रशिक्षुओं से जैसे– फूल–काँटा, ठंडा–गरम, मोटा–पतला, छोटा–बड़ा। इनके स्वभाव व आकार आदि के बारे में अनुभव एवं प्रयोग के आधार पर चर्चा करेंगे।

❖ प्रशिक्षक कक्षा को दो समूहों में बाँटकर एक समूह के सदस्यों को शब्द कार्ड बाँटेंगे और दूसरे समूह के सदस्यों को विपरीत अर्थ वाले शब्द कार्ड बाँटेंगे। अब जिस सदस्य के पास जो शब्द कार्ड हो उसे अपने विपरीत अर्थ वाले शब्द कार्ड प्राप्त सदस्य के साथ खड़ा होने के लिए कहेंगे; **जैसे–**

समूह– अ	समूह– ब
कोमल	कठोर
आगे	पीछे
ऊँचा	नीचा
हार	जीत

अब प्रशिक्षुओं को उन शब्दों के अर्थ के बारे में बताएँगे। प्रशिक्षु स्वयं कुछ शब्दों को बोलते हुए अपने अन्य सहयोगी प्रशिक्षुओं से उन शब्दों के उल्टे अर्थ वाले शब्द बोलने को कहेंगे।

यह स्पष्ट करेंगे कि किसी शब्द का विपरीत अर्थ देने वाला शब्द 'विलोम शब्द' कहलाता है।

प्रस्तुतीकरण

विलोम शब्द– जो शब्द पारस्परिक विपरीत अर्थ को प्रकट करते हैं; उनको विलोम शब्द कहा जाता है; जैसे– गुण–अवगुण, धर्म–अधर्म।

सामान्यतः विलोम शब्दों के निर्माण में अ, अव, प्रति, अप, वि, निर्, अन्, दुर, नि, निः, आ, सु, कु आदि उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है। 'अ' और 'अन्', उपसर्गों के प्रयोगों के संदर्भ में यह एक सामान्य–सा नियम है कि कोई तत्सम–शब्द यदि व्यंजन से प्रारम्भ होता है तो विरोधी शब्द बनाते समय उसमें 'अ' उपसर्ग का प्रयोग किया जाता है। जैसे– कार्य–अकार्य, धीर–अधीर। इसी प्रकार यदि कोई तत्सम शब्द स्वर से प्रारंभ हो रहा है तो उसमें 'अन्' का प्रयोग किया जाता है। जैसे– औचित्य–अनौचित्य, औदार्य–अनौदार्य।

हिन्दी में विलोम शब्दों का निर्माण निम्नलिखित चार प्रकार से किया जाता हैं–

1. स्वतंत्र शब्दों द्वारा– स्वर्ग–नरक, मधुर–कटु, घृणा–प्रेम।
2. उपसर्गों के प्रयोग द्वारा– कार्य–अकार्य, धीर–अधीर, भेद–अभेद।
3. लिंग परिवर्तन द्वारा– पुत्र–पुत्री, नर–नारी, पिता–माता।
4. ऊनार्थक या न्यूनार्थक शब्दों के प्रयोग द्वारा– गागर–गगरी ,खाट–खटिया, चोटी–चुटिया।

समेकन

इस प्रकार कह सकते हैं कि जब कोई एक शब्द किसी दूसरे शब्द का उलटा या विपरीत अर्थ व्यक्त करे, तो उसे विलोम शब्द कहा जाता है; जैसे– रात का विलोम शब्द या विपरीतार्थक दिन है। विलोम शब्द का निर्माण स्वतंत्र शब्द, उपसर्ग, लिंग परिवर्तन और न्यूनार्थक शब्दों के प्रयोग द्वारा होता है।

3.4 तुकांत शब्द

गतिविधि–1

गतिविधि का नाम : पढ़ें और समझें

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : चार्ट पेपर पर लिखी कविता।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

- ❖ प्रशिक्षक चार्ट पेपर पर एक ऐसी कविता लिखकर प्रस्तुत करेंगे, जिनमें अंतिम स्वर समान हो;
  जैसे–

"हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह **बोला**,
सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक **झिंगोला**।
सनसन चलती हवा रात भर, जाड़े से **मरता हूँ**,
ठिठुर–ठिठुर कर किसी तरह यात्रा पूरी **करता हूँ**।
आसमान का सफर और यह मौसम है **जाड़े का**,
न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही कोई **भाड़े का**।"
बच्चे की सुन बात कहा माता ने, **"अरे सलोने** !
कुशल करें भगवान, लगे ना तुझको **जादू–टोने**।
जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो **डरती हूँ**,
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा **करती हूँ**।"

- ❖ प्रशिक्षक कविता की प्रत्येक पंक्ति के अंतिम स्वर ,बोला, झिंगोला, मरता हूँ, करता हूँ, जाड़े का–भाड़े का, सलोने–टोने की ओर ध्यान आकर्षित कर स्पष्ट करेंगे कि जिन शब्दों के अंत की ध्वनियाँ एक समाान रहती हैं, उन्हें तुकांत शब्द कहते हैं। कविता में तुकांत शब्दों का बहुत महत्त्व है।

गतिविधि–2

- ❖ प्रशिक्षु नीचे दिए गए छंद को पढ़कर तुकांत शब्दों को चिह्नित करेंगे–

"मैया, कबहिं बढ़ैगी **चोटी?**
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है **छोटी।**
तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वै है लाँबी–**मोटी।**
काढ़त–गुहत न्हवावत जैहैं, नागिनि–सी भुइँ **लोटी** ।
काचौ दूध पियावति पचि–पचि, देति न माखन **रोटी।**
सूरज चिरजीवौ दोउ भैया, हरि–हलधर की **जोटी** ।।
– (सूरदास)

प्रस्तुतीकरण

समान तुक वाले शब्द वे शब्द हैं, जिन शब्दों का अंत समान ध्वनि या उच्चारण के साथ होता है। इन्हें तुकांत शब्द भी कहते हैं; जैसे–

बीन भी हूँ मैं, तुम्हारी रागिनी भी हूँ।
कूल भी हूँ , कूलहीन प्रवाहिनी भी हूँ।।

इन पंक्तियों में 'हूँ' की आवृत्ति जो कविता के लय को पूर्ण कर रही है, उसे तुकांत कहते हैं। इस कविता में 'हूँ' से कविता का आनंद बढ़ जाता है। कविता भूलने की स्थिति में तुकांत के आधार पर कविता तुरंत याद आ जाती है।

गतिविधि

प्रशिक्षु बच्चों के बीच दो या तीन वर्ण वाले शब्दों को बोलकर उसका तुक मिलाने का अभ्यास करवाएँगे। जैसे–

शब्द	तुक
लाया–	पाया, खाया, भाया, आया आदि।
करेगा–	भरेगा, लड़ेगा, रखेगा, जमेगा आदि।

3.5 समान ध्वनि वाले शब्द

ऐसे शब्द जिनकी वर्तनी में अंतर होने पर भी सुनने में लगभग एक से प्रतीत होते हैं तथा इनकी ध्वनि भी मिलती–जुलती है, लेकिन अर्थ भिन्न होते हैं, ऐसे शब्दों को श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द या समरूप भिन्नार्थक शब्द कहा जाता है। जैसे– 'आचार और अचार'। इन दोनों शब्दों की ध्वनियों में लगभग समानता 'आचार और अचार' की है लेकिन इनके अर्थ में बहुत भिन्नता है।
जैसे–

अचार– एक व्यंजन (खाने की वस्तु) आचार– आचरण/व्यवहार	अवधि– समय अवधी– भाषा	अनल– आग अनिल– वायु

गतिविधि–1

❖ प्रशिक्षक कक्षा के बच्चों को दो समूहों में बैठा देंगे। इसके बाद समान ध्वनि वाले शब्दों के फ्लैश कार्ड लेकर उसे समूह एक व समूह दो को बाँट देंगे। अब समूह एक व दो को फ्लैश कार्ड पर लिखे शब्दों की वर्तनी को ध्यान से पढ़ने को कहेंगे तथा अर्थ के साथ बच्चों को उनके सूक्ष्म अंतर बताएँगे। यह गतिविधि बार–बार दोहराने से समान ध्वनि वाले शब्दों में सूक्ष्म अंतर की पहचान हो सकेगी।

गतिविधि का नाम : सुनो और पहचानो

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : फ्लैश कार्ड।

उद्‌देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

समूह – एक	समूह – दो
अम्बु	अम्ब

3.6 समानार्थी शब्द

गतिविधि–2

❖ प्रशिक्षक शिक्षण के दौरान कुछ फ्लैश कार्ड प्रशिक्षुओं को वितरित करेंगे।

गतिविधि का नाम : सुनो और समझो

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : फ्लैश कार्ड।

उद्‌देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

गाय धेनु	अभिमान अहंकार
गंगा भागीरथी	तालाब सरोवर

प्रशिक्षु वितरित किए गए फ्लैश कार्ड से समानार्थी शब्दों का अर्थ समझेंगे और प्रशिक्षक बताएँगे कि ऐसे शब्द, जो परस्पर समान अर्थ का बोध कराते हैं, समानार्थी शब्द कहलाते हैं।

प्रस्तुतीकरण

ऐसे शब्द जिनका अर्थ समान होता है उन्हें हम पर्यायवाची शब्द या समानार्थी शब्द कहते हैं। पर्यायवाची या समानार्थी शब्दों को समानार्थक शब्द भी कहा जाता हैं। "पर्याय' का अर्थ है समान तथा 'वाची' का अर्थ है बोले जाने वाले, मतलब समान बोले जाने वाले शब्दों को हम पर्यायवाची शब्द या समानार्थी शब्द कहते हैं। पर्यायवाची शब्दों या समानार्थी शब्दों को समानार्थक शब्द भी कहा जाता है।"

उदाहरण–

सूर्य– दिनकर, दिवाकर, रवि, भास्कर, भानु

असुर– राक्षस, रजनीचर, दैत्य, निशाचर, दनुज।

गणेश– गणपति, लंबोदर, विनायक, गजानन, गजमुख, गजवदन।

दास– सेवक, अनुचर, किंकर, नौकर, भृत्य।

बोध परीक्षण

1. विलोम शब्द से आप क्या समझते हैं? विपरीतार्थक शब्द की अवधारणा का विकास आप कैसे करेंगे?
2. तुकांत शब्द से आप क्या समझते हैं ? लायक और सजावट का तुकांत बनाइए।
3. समान ध्वनि वाले शब्दों से आप क्या समझते हैं?
4. किन्ही चार समान ध्वनि वाले शब्दों को लिखकर उनमें अंतर स्पष्ट कीजिए।
5. समानार्थी शब्द से आप क्या समझते हैं? किन्ही चार शब्दों के तीन–तीन समानार्थी शब्द लिखिए।

स्व आकलन

1. **नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–**

शब्द	विलोम शब्द
दु:ख	
अनिवार्य	
चेतन	
ऊपर	
आनंद	

2. **तालिका में दिए गए शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए–**

शब्द	तुकांत शब्द
माला	
रानी	
जादू	
रोटी	
गाना	

3. तालिका में दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए–

शब्द	पर्यायवाची शब्द
गाय	
नदी	
सूर्य	
रात	
चंद्रमा	
विद्‌यालय	

4. तालिका में दिए गए समान ध्वनि वाले शब्दों के अर्थ लिखिए–

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अनल		अनिल	
अजिर		अचिर	
कंकाल		कंगाल	
खड़ा		खरा	
अंस		अंश	

विचार विश्लेषण

1. उत्पत्ति के आधार पर शब्द के कितने भेद होते हैं?
2. रूढ़ शब्द से आप क्या समझते हैं?
3. विलोम/विपरीतार्थी शब्द किसे कहते हैं?
4. तुकांत शब्द से आप क्या समझते हैं?
5. समान ध्वनि वाले भिन्नार्थक और समानार्थी शब्दों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

इकाई 4

अल्पविराम, अर्द्धविराम, पूर्णविराम, प्रश्नवाचक, विस्मय-बोधक, अवतरण-चिह्न, विराम चिह्नों का ज्ञान एवं उनका प्रयोग

4.1- विराम चिह्न
4.2- विराम चिह्नों के प्रकार/वर्गीकरण
4.3- अल्पविराम
4.4- अर्द्धविराम
4.5- पूर्णविराम
4.6- प्रश्नवाचक चिह्न
4.7- विस्मयादि बोधक चिह्न
4.8- अवतरण/उद्धरण चिह्न

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. वाक्यों के उच्चारण में विराम चिह्नों आदि को समझ लेते हैं।
2. विरामचिह्नों की उपयोगिता एवं महत्त्व को जान लेते हैं।
3. लिखित सामग्री में प्रयुक्त विराम चिह्नों को पहचान लेते हैं।
4. लेखन कार्य में विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग कर लेते हैं।

4.1 विराम चिह्न

यह संसार सदैव से गतिमान रहा है, परन्तु चलने की इस प्रक्रिया में कई बार रुकने या ठहरने की भी आवश्कता होती है। उसी प्रकार जब हम अपने विचारों और भावों को लिखित रूप में व्यक्त करते हैं तो अपनी भावनाओं और विचारों को अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ चिह्नों का प्रयोग करते हैं, उन चिह्नों को ही विराम चिह्न की संज्ञा दी जाती है। जिस प्रकार हम अपने भावों या विचारों को प्रकट करने के लिए भाषा या संकेतों की सहायता लेते हैं, ठीक उसी प्रकार भावों या विचारों को प्रभावी रूप से व्यक्त करने के लिए विराम चिह्नों का प्रयोग भाषा में किया जाता है।

विराम शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है–''ठहरना या रुकना''। संस्कृत में इसे ''यति'' के नाम से भी जानते हैं। विराम शब्द की व्युत्पत्ति 'वि' उपसर्ग पूर्वक + (रम्) + 'घञ्' प्रत्यय के योग से हुई है, जिसका मूल अर्थ 'ठहराव', 'आराम' आदि होता है। जिस तरह हमारे जीवन में उतार–चढ़ाव एवं ठहराव आता है, उसी प्रकार भावों को व्यक्त करते समय उचित विराम चिह्न रूपी उतार–चढ़ाव एवं ठहराव का प्रयोग होता रहता है; जैसे–

उसे रोको मत जाने दो, वाक्य को लें। विराम चिह्न के प्रयोग से वक्ता के कथन का पूरा अर्थ ही बदल जाता है–

उसे रोको मत, जाने दो।
उसे रोको, मत जाने दो।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. विराम चिह्नों की अवधारणा एवं महत्ता को स्पष्ट करना है।
2. विराम चिह्नों के संबंध में विभिन्न गतिविधियों/उद्धरण के माध्यम से प्रशिक्षुओं की समझ को समृद्ध करना है।

प्रशिक्षुओं के लिए निर्देश

1. छोटे–छोटे सहज एवं सरल वाक्यों के माध्यम से बच्चों को अभ्यास कराना।
2. विभिन्न विराम चिह्नों के अभाव में उत्पन्न विसंगतियों की पहचान कराना।
3. पठन एवं लेखन कार्य में विराम चिह्नों की पहचान एवं प्रयोग कराया जाना।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षु कक्षा सात 'दीक्षा' हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित 'मेरी यूरोप यात्रा' के गद्यांश को श्यामपट्ट पर लिखेंगे–

❖ ''हमने रेगिस्तान में एक विचित्र मूर्ति भी देखी। इसे 'स्फिंक्स' कहा जाता है। सुनते हैं, प्राचीन काल में यह प्रश्नों के उत्तर देती थीं।'' इस गद्यांश का बच्चों से वाचन करवाते हुए कुछ प्रश्न करेंगे–

गतिविधि का नाम : विराम चिह्नों की पहचान

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : पाठ्यपुस्तक।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

प्रश्न 1. साधारण वाक्य के अंत में जो चिह्न लगता है उसे क्या कहते हैं?

संभावित उत्तर– ...

प्रश्न 2. सुनते हैं, शब्द के बाद का चिह्न क्या कहलाता है?

संभावित उत्तर– ...

प्रश्न 3. 'स्फिंक्स' शब्द जिस चिह्न के अंदर लिखा गया है, उसे क्या कहते हैं?

संभावित उत्तर– ...

प्रशिक्षु गद्यांश में आए इन चिह्नों के बारे में बच्चों को बताएँगे। वास्तव में उद्धरण/अनुच्छेद में आए चिह्न/प्रतीक शब्दों और वाक्यों का परस्पर संबंध बताने तथा किसी विषय को भिन्न–भिन्न भागों में बाँटने और पढ़ने में ठहरने के लिए जिन चिह्नों का उपयोग किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

प्रस्तुतीकरण

विराम चिह्नों के प्रयोग से भाषा में मानवीय भावों को वहन करने की क्षमता आ जाती है। वास्तव में विराम चिह्न भाषा रचना का विषय है। विराम चिह्नों के समुचित प्रयोग से किसी भी वाक्य या अनुच्छेद में निहित अर्थ, भाव एवं विचार स्पष्ट हो जाते हैं। इसके लिए विराम चिह्नों के विभेदों को जानना आवश्यक है।

4.2 विराम चिह्नों के प्रकार या वर्गीकरण

हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले विराम–चिह्न निम्न हैं–

1. पूर्णविराम (Full Stop)	(।)
2. अल्पविराम (Comma)	(,)
3. अर्द्धविराम (Semi Colon)	(;)
4. प्रश्नवाचक (Mark of Interrogation)	(?)
5. विस्मयादि बोधक (Mark of Exclamation)	(!)
6. उपविराम (Colon)	(:)
7. योजक चिह्न (Hyphen)	(-)
8. निर्देशक चिह्न (Dash)	(–)
9. विवरण चिह्न (Sign of Following)	(:–)
10. लाघव चिह्न (Sign of Abbreviation)	(•)
11. उद्धरण चिह्न (Inverted Commas)	(" ") और (' ')
12. कोष्ठक (Bracket)	(( ), { })

4.3 अल्पविराम (,)

अल्प का अर्थ होता है 'थोड़ा'। विराम का अर्थ होता है 'रुकना'। वाक्य में अपने भावों को सम्प्रेषित करने के क्रम में जब थोड़े ठहराव की आवश्यकता होती है; तब अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– रमेश, सुरेश, दिनेश और महेश बाजार जा रहे हैं।

वाक्यों में अल्पविराम का प्रयोग अलग–अलग परिस्थितियों में किया जाता है–

❖ वाक्य में एक ही प्रकार के शब्दों को एक–दूसरे से अलग करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

जैसे– उसने किताब, कलम, पेंसिल और रबर खरीदा।

❖ वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के जोड़ों को अलग–अलग करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

जैसे– लाभ और हानि, जीवन और मरण, यश और अपयश ये सब जीवन के अभिन्न अंग हैं।

❖ किसी वाक्यांश या उपवाक्य को अलग करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

जैसे– नई तकनीकी के कारण, आगे से पठन–पाठन की प्रक्रिया बदल जायेगी। रमेश कुमार रूस गए, चार वर्ष वहाँ रहे, परिश्रम से शोध कार्य किया, पी0एच0डी0 की उपाधि ले कर वापस भारत आए।

❖ किसी उद्धरण से पूर्व अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– उसने कहा, "ईश्वर सर्वव्यापक है।"

❖ समानाधिकरण शब्दों को अलग करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

जैसे– खाँ अब्दुल गफ्फार खाँ, सीमांत गाँधी, आजकल भारत आए हैं।

❖ संबोधन कारक की संज्ञा के बाद।

जैसे– मोहन, यहाँ आओ।

❖ उदाहरणार्थ प्रयुक्त 'जैसे' 'यथा' आदि शब्दों के पश्चात् प्रयोग किया जाता है।

जैसे– उसमें अनेक गुण हैं, वह सच्चा है, वीर है और दयालु है।

❖ नाम और उपाधि के बीच में और कई उपाधियाँ हों, तो उनको एक–दूसरे से पृथक करने के लिए किया जाता है।

जैसे– पं0 राम शंकर मिश्र, एम0ए0, एल0एल0बी0 उत्तीर्ण हैं।

❖ एक ही शब्द या वाक्यांश की पुनरावृत्ति होने पर।

जैसे– दौड़ो, दौड़ो, रेलगाड़ी चल दी।

❖ पता लिखने में नाम, मकान सं0, मुहल्ला अथवा गाँव, डाकघर और जिले के बाद प्रयोग किया जाता है।

श्री राम प्रसाद गुप्त ,
415, नया मम्फोर्डगंज,
प्रयागराज–2,
उत्तर प्रदेश

4.4 अर्द्ध विराम (;)

जहाँ अल्पविराम से अधिक एवं पूर्णविराम से कम ठहरना हो, वहाँ पर अर्द्ध विराम (;) के चिह्न का प्रयोग किया जाता है। अर्द्ध विराम पृथक्करण का चिह्न है। इसके प्रयोग के लिए एक सामान्य नियम यह है कि अधिकतर ऐसे स्थानों में हमें अर्द्ध विराम का प्रयोग करना चाहिए जहाँ हम पूर्ण विराम का प्रयोग नहीं कर सकते हैं। इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थानों पर होता है–

❖ संयुक्त वाक्य से उपवाक्यों का पृथक्करण करने के लिए प्रयोग किया जाता है। जैसे– हमें भविष्य के विषय में कुछ नहीं मालूम है; वर्तमान में सत्कर्म करना और प्रसन्न रहना हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

❖ वाक्यों के बीच में जो विकल्प से अन्तिम समुच्चयबोधक के द्वारा जोड़े जाते हैं। जैसे–ध्यान से पढो; परीक्षा निकट है।

❖ किसी नियम के बाद आने वाले उदाहरण–'जैसे' अथवा 'यथा' के पहले प्रयोग किया जाता है; जैसे अपनी बात की पुष्टि के लिए वह बहुत कुछ बोला।

4.5 पूर्ण विराम (।)

पूर्ण विराम का शाब्दिक अर्थ होता है– पूरी तरह से रुकना।

❖ सामान्यत: जहाँ वाक्य की गति अंतिम रूप ले ले, विचार के तार एकदम टूट जायें; वहाँ पूर्ण विराम का प्रयोग होता है।
जैसे– यह शेर है। वह लड़का है। मैं आदमी हूँ। तुम आ रहे हो।

इन वाक्यों में सभी एक–दूसरे से स्वतंत्र हैं। सबके विचार अपने में पूर्ण हैं। ऐसी स्थिति में प्रत्येक वाक्य के अंत में पूर्ण विराम लगना चाहिए। संक्षेप में प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर पूर्ण विराम का प्रयोग होता है।

❖ अप्रत्यक्ष प्रश्न के अंत में प्रश्न–चिह्न न लगाकर पूर्ण विराम का प्रयोग करते हैं।

जैसे– आपने यह तो नहीं बताया कि आप कहाँ रह रहे हैं।

❖ चौपाई, दोहा और सोरठा आदि पद्य लिखने में भी पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है।
जैसे–

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं।
उनते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं।।

❖ कभी–कभी किसी व्यक्ति या वस्तु का सजीव वर्णन करते समय वाक्यांशों के अंत में पूर्ण विराम का प्रयोग होता है। **जैसे–**

गोरा रंग। पानीदार बड़ी–बड़ी आँखें।
चौड़ा माथा। बाहर बंद गले का लम्बा कोट।

4.6 प्रश्नवाचक चिह्न (?)

जिन वाक्यों में प्रश्न पूछने का भाव निहित हो, उन वाक्यों के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– क्या आप वाराणसी से आ रहे हैं?

❖ जहाँ स्थिति स्पष्ट अथवा निश्चित न हो; वहां प्रश्न वाचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– शायद आप उत्तर प्रदेश के रहने वाले हैं?

❖ व्यंग्योक्तिपूर्ण वाक्यों में भी प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– भ्रष्टाचार इस युग का सबसे बड़ा शिष्टाचार है, है न?

❖ यदि एक ही वाक्य में कई पृच्छाएं हो तो प्रत्येक के बाद प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
जैसे– आप क्या खाएँगे? फलाहारी मिठाई? फल? मेवा? दूध? दही?

4.7 विस्मयादि बोधक चिह्न (!)

इसका प्रयोग हर्ष, विषाद, विस्मय, घृणा, आश्चर्य, करुणा, भय इत्यादि भाव व्यक्त करने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है–

❖ आह्लाद सूचक शब्दों, पदों और वाक्यों के अंत में इसका प्रयोग होता है।
जैसे– वाह! तुम्हारा क्या कहना!

❖ मनोविकार सूचित करने में यदि प्रश्न वाचक शब्द आते हैं, तब भी विस्मयादि बोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
जैसे– क्यों री! तू आँखों से अंधी है।

❖ अपनों से बड़ों को सादर संबोधित करने में इस चिह्न का प्रयोग होता है।
जैसे– हे ईश्वर! सबका कल्याण हो।

❖ मनोविकारों की बढ़ती तीव्रता को दर्शाने के लिए एक से अधिक विस्मय बोधक चिह्न लगाने का विधान है।
जैसे– अन्याय! अन्याय!! घोर अन्याय!!!

❖ जहाँ अपने से छोटों के प्रति शुभकानाएँ और सद्भावनाएँ प्रकट की जाएँ, वहाँ भी विस्मयादि बोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
जैसे– भगवान् तुम्हारा भला करें! यशस्वी हो! प्रिय पुत्र, स्नेहाशीर्वाद !

4.8 अवतरण चिह्न अथवा उद्धरण चिह्न (" ")/(' ')

जब किसी के कथन/उद्धरण को यथावत् प्रस्तुत किया जाता है, तब उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है। उद्धरण चिह्न के दो रूप होते हैं– इकहरा (' ') तथा दुहरा (" ")।

❖ जहाँ किसी पुस्तक से कोई वाक्य या अवतरण ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाता है, वहाँ दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे–"करो या मरो"– महात्मा गाँधी

❖ जहां कोई विशेष शब्द, पद, वाक्य खंड, रचनाकार का नाम, शीर्षक इत्यादि उद्धृत किए जाते हैं तो वहां इकहरे उद्धरण चिह्न लगते हैं।

जैसे– 'रामचरितमानस' विश्व प्रसिद्ध रचना है।

❖ किसी शब्द या शब्द–समूह पर विशेष बल देने या ध्यान आकर्षित करने के लिए उद्धरण चिह्न/अवतरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे– किसी कथन को हू–ब–हू लिखने के क्रम में–

स्वामी विवेकानंद का कथन है कि
"हम संसार के ऋणी हैं, संसार हमारा ऋणी नहीं।"

तोता उत्साह में बोला, "अरे देखो! उस कुंड में पानी है। वहाँ हुदहुद पानी पी रहा है।"
कबूतर ने कहा, "अरे वाह! वहाँ तो एक गिलहरी भी है।"

गतिविधि

❖ उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित पाठ्य–पुस्तकों से पठित गद्यांशों के अभ्यास अथवा गतिविधि हेतु प्रशिक्षुओं द्वारा प्रयोग किया जायेगा।

गतिविधि का नाम : विराम चिह्नों की पहचान
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : पाठ्यपुस्तक।
उद्देश्य– विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

1. "मैं खूँखार जानवरों के डर से यहाँ बैठा हूँ," मुर्गा बोला। लोमड़ी बोली, "अरे! क्या आज का सबसे बड़ा समाचार तुमने नहीं सुना? सभी पशु–पक्षियों में समझौता हो गया है। अब कोई किसी पर हमला नहीं करेगा।"
मुर्गे ने कहा, "यह तो वास्तव में दुनिया का सबसे अच्छा समाचार है।" कहते–कहते उसने अपनी गरदन उठाकर देखा, जैसे दूर की कोई चीज देख रहा हो।

2. "मेरी प्यारी गुफा! आपके चुप रहने का रहस्य मैं जान रही हूँ। आज भीतर अवश्य ही कोई खूँखार जानवर बैठा है, जिसके कारण आप मुझसे बात नहीं कर रही हो। अच्छा तो मैं चलती हूँ।"

शेर को लगा कि शिकार हाथ से निकल रहा है। उसने सोचा कि जरूर यह गुफा लोमड़ी से बात करती होगी। मेरे डर के मारे गुफा आज लोमड़ी से बात नहीं कर रही है। चलो गुफा की तरफ से मैं ही बोलता हूँ। यह सोचकर शेर आवाज बदल कर बोला– "अरे, जरा रुको प्यारी लोमड़ी! मैं गहरी नींद में सो रही थी इसलिए आपसे बात न कर सकी। अंदर सब ठीक है। आप बिना भय और संदेह के अंदर चली आओ।"

3. सिपाही बोला, "ऐ घमंडी चिड़िया, तेरी यह मजाल कि मुझे जाते हुए रोके! मेरा काम कानून और शांति बनाए रखना है। उसी की मुझे तनख्वाह मिलती है। तुम मरो या जियो, मुझे इससे क्या ! चिड़िया को डाँट पड़ी तो वह डर गई।

तभी उधर से एक थानेदार निकला। उसने उसे रोका और सारी कहानी बताकर कहा, थानेदार जी, क्या आप मुझ गरीब की सहायता नहीं करेंगे ?" थानेदार दहाड़ा, "तुम्हारी यह हिम्मत कि मुझे रोक रही हो? जानती नहीं, मंत्री जी दौरे पर आ रहे हैं और मुझे ही सारा बंदोबस्त करना है, उन्होंने मेरे काम को पसंद न किया तो मेरी तरक्की कैसे होगी? तुम्हारा मटर का दाना खो गया है तो मुझे क्या?" यह कहकर थानेदार भी चल दिया।

निर्देश– उपर्युक्त गद्याशों अथवा पद्याशों में आए हुए विभिन्न विराम चिह्नों को ढूँढ़कर या छाँटकर उनका नाम लिखिए? बच्चों को समूहों में बाँटकर आपस में विभिन्न विराम चिह्नों से युक्त संवाद करने को कहेंगे।

बोध परीक्षण

1. पूर्णविराम कब और किन स्थितियों में प्रयोग किया जाता है? उदाहरण सहित स्पष्ट करें।
2. अल्प विराम, अर्द्धविराम का प्रयोग कब और कहाँ किया जाता है? उदाहरण सहित स्पष्ट करें।
3. किसी पुस्तक अथवा महान व्यक्तित्व के शब्दों को ज्यों का 'त्यों–लिखने के लिए किन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है?
4. मन के तीव्र मनोभावों अथवा विचारों को व्यक्त करने के लिए किस विराम चिह्न का प्रयोग करते हैं?
5. प्रश्न पूछने वाले शब्दों अथवा वाक्यों में किस चिह्न का प्रयोग किया जाता है?
6. अल्प विराम एवं अर्द्ध विराम में अंतर स्पष्ट करें।

समेकन

1. वाक्य लिखते समय विचारों के प्रभावी प्रकटीकरण अथवा अभिव्यक्ति हेतु जिन विशेष चिह्नों अथवा प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।
2. वाक्य के अंत में 'पूर्ण विराम' चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
3. तीव्र भावों के प्रकट करने में विस्मयादि बोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
4. प्रश्नों के पूछने (पृच्छा) के अर्थ में प्रश्न वाचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
5. किसी विशेष विचार अथवा उक्ति को उद्धृत करने के लिए उद्धरण अथवा अवतरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

6. समान शब्दों एवं वाक्यों को अलग–अलग दिखाने के लिए 'अल्प विराम' का प्रयोग किया जाता है।
7. उप वाक्यों को मुख्य वाक्य से पृथक करने के लिए अद्र्ध विराम का प्रयोग किया जाता है।

स्व आकलन

1. निम्न गद्य खंड में उचित विराम–चिह्न लगाइए–

शिक्षक ने राम प्रसाद से पूछा तुम कहाँ रहते हो रामप्रसाद ने कहा कटरा में तुम्हारे साथ और कौन रहता है महाशय मैं अपने माता–पिता के साथ रहता हूँ क्या तुम किराए के मकान में रहते हो जी नहीं मेरे पिताजी ने हमारे रहने के लिए एक मकान खरीदा है क्या वहां कोई और मकान खाली है मैं आस–पास में देखकर कल बतलाऊँगा।

2. निम्नलिखित विराम–चिह्नों को उनके उचित नाम के साथ मिलान कीजिए–

चिह्न	नाम
?	पूर्णविराम
,	विस्मयादिबोधक
" "	अल्पविराम
।	प्रश्नवाचक
;	उद्धरण/अवतरण
!	अद्र्ध विराम

3. दिए गए वाक्यों में विराम चिह्नों का शुद्ध एवं उचित प्रयोग कीजिए–

- ❖ अरे, राम तुम कब आए।
- ❖ तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं ।
- ❖ आज हम सब घूमने जाएंगे ?
- ❖ सुभाष चन्द्रबोस ने कहा; तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।
- ❖ मोहन के पास पुस्तक! कलम! ड्रेस और जूता कुछ भी उपलब्ध नहीं है।
- ❖ पृथ्वी गोल है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है।

4. **निम्नलिखित अनुच्छेद में आए हुए विराम चिह्नों को छाँटकर अथवा ढूँढकर उनका सही नाम लिखिए–**

गंगा के किनारे–किनारे घाट बने थे। बड़ी–बड़ी छतरियाँ लगी हुई थीं। बहुत सारी सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। उन पर बैठे कुछ लोग नहा रहे थे। एक मंदिर लग रहा था जैसे पानी में अब गिरा, अब गिरा। ''यह टेढ़ा मंदिर है मोनू।'', दीदी ने बताया। कैसे रुका हुआ होगा वह मंदिर? मैं सोचता रहा।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. इतना बड़ा रसगुल्ला ....
   (क) । (ख) , (ग) ! (घ) ;
2. कैसे रुका हुआ होगा वह मंदिर ....
   (क) ; (ख) ? (ग) " " (घ) ।
3. वाह तुमने तो कमाल कर दिया। ....
   (क) । (ख) , (ग) ! (घ) ;
4. गुब्बारेवाले ने कहा एक भी नहीं हैं। ....
   (क) । (ख) , (ग) ; (घ) !
5. वह आया खाना खाया सो गया। ....
   (क) ! (ख) ' ' (ग) – (घ) ;
6. '?' यह किसका चिह्न है–
   (क) पूर्णविराम (ख) विस्मयादिबोधक (ग) प्रश्नवाचक (घ) अद्र्ध विराम
7. अल्पविराम का चिह्न है–
   (क) । (ख) , (ग) ! (घ) ;
8. हे राम .... मेरा दु:ख दूर करो–
   (क) । (ख) , (ग) ! (घ) ;
9. वाराणसी .... एक धार्मिक और प्राचीन नगरी है।
   (क) ? (ख) ' ' (ग) ! (घ) :
10. बी.ए. एम.ए. उत्तीर्ण छात्र यहाँ आते हैं।
    (क) । (ख) , (ग) ! (घ) ;
11. संबोधन में लगने वाला चिह्न–
    (क) । (ख) , (ग) ! (घ) ;
12. किसी उद्धरण अथवा अवतरण से पूर्व लगने वाला चिह्न–
    (क) । (ख) , (ग) " " (घ) ;
13. कब, क्या, क्यों वाले वाक्यों के अंत में लगने वाले चिह्न–
    (क) प्रश्नवाचक चिह्न (ख) पूर्णविराम
    (ग) उद्धरण अथवा अवतरण चिह्न (घ) अल्पविराम

14. 'विराम' का अर्थ होता है–

(क) चलना (ख) ठहरना (ग) बोलना (घ) इनमें से सभी

15. विवरण चिह्न कौन सा है–

(क) , (ख) :– (ग) ! (घ) ?

16. विस्मयादिबोधक चिह्न लगाए जाते हैं–

कथन 1. मनोविकारों की बढ़ती तीव्रता दर्शाने में
कथन 2. आह्लाद सूचक वाक्यों, पदों, में प्रयोग किया जाता है।

(क) केवल कथन (1) सही है।
(ख) केवल कथन (2) सही है।
(ग) दोनों कथन (1) व (2) सही हैं।
(घ) दोनों कथन (1) व (2) गलत है।

विचार विश्लेषण

1. अल्पविराम का प्रयोग कब किया जाता है?
2. विराम चिह्न से क्या अभिप्राय है? प्रमुख विराम चिह्नों का नामोल्लेख कीजिए।
3. कोष्ठक चिह्न का प्रयोग कहाँ किया जाता है?
4. अद्र्ध विराम तथा पूर्ण विराम का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनके एक एक उदाहरण लिखिए ?
5. प्रश्न वाचक चिह्न से आप क्या समझते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।
6. पूर्ण विराम एवं अद्र्ध विराम के दो–दो उदाहरण दीजिए।
7. पूर्ण विराम एवं विस्मयादिबोधक चिह्न में क्या अंतर है?
8. भाषा में विराम चिह्नों की आवश्यकता व महत्त्व को स्पष्ट करते हुए किसी विराम चिह्नों के बारे में लिखिए।
9. अल्प विराम, अद्र्ध विराम, पूर्ण विराम एव प्रश्नवाचक चिह्नों का एक–एक उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
10. विराम चिह्नों का आशय स्पष्ट कीजिए।

प्रोजेक्ट कार्य

प्रतिदिन समाचार पत्र के एक अनुच्छेद में आए विराम चिह्नों को पहचान कर संग्रह कर सत्रीय कार्य तैयार कीजिए।

इकाई 5

लेखन शिक्षण की विधियाँ और लिखना, सीखने में ध्यान रखने योग्य बातें- बैठने का ढंग, आँखों से कागज की दूरी, कलम पकड़ने की विधि, शिरोरेखा, लिपि, अक्षर की सुडौलता और उपयुक्त नमूने, अभ्यास, सुलेख, अनुलेख-श्रुतलेख

5.1- लेखन
5.2- लेखन कौशल
5.3- लेखन कौशल विकास के विभिन्न चरण
5.4- बोलने और लिखने में अंतर
5.5- लेखन का महत्त्व
5.6- लेखन का उद्देश्य
5.7- व्यवस्थित लेखन के सोपान
5.8- लेखन कौशल के आयाम
5.9- लेखन शिक्षण की विधियाँ
5.10- लिखना सिखाने में ध्यान देने योग्य बातें
5.11- सुलेख
5.12- अनुलेख
5.13- श्रुतलेख

प्रशिक्षण संप्राप्ति

- लेखन एवं लेखन शिक्षण विधियों को समझ के साथ बता लेते हैं।
- लेखन करते समय ध्यान रखने योग्य मुख्य बातों को बता लेते हैं।
- वर्ण विन्यास के लेखन की आधारभूत जानकारी रखते हैं।
- सुलेख, अनुलेख एवं श्रुतलेख की समझ रखते हैं एवं उनमें अंतर कर लेते हैं।

5.1 लेखन शिक्षण

भाषा भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। इसका प्रयोग हम दो रूपों में करते हैं– मौखिक एवं लिखित। मौखिक भाषा में अपने भावों और विचारों को बोलकर दूसरे के सामने प्रस्तुत करते हैं, वहीं जब हम प्रतीक चिह्न अर्थात् लिपियों के द्वारा लिखकर अपने विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं तो इसे लिखना कहते हैं।

भाषायी दक्षताओं के क्रम में यदि भाषा सिखाने की प्रक्रिया अपनाई जाती है तो वहाँ पर भाषा के लिए हम सु– सुनना, बो– बोलना, प– पढ़ना, लि– लिखना, इस क्रम में चलते हैं। यदि हम किसी बच्चे को भाषा में दक्ष बनाना चाहते हैं तो सबसे पहले हम उसको सुनाने के लिए सहज और आकर्षक तरीके से तुकांत गीत, कविताएँ, रोचक प्रसंग एवं संदर्भ सुनने का अवसर देंगे, फिर उसको बोलने के लिए प्रेरित करेंगे। इसके बाद उसे वर्णों की पहचान कराकर पढ़ने, लिखने के लिए प्रेरित करेंगे।

लेखन भाव एवं विचारों की कलात्मक अभिव्यक्ति और शब्दों को व्यवस्थित करने की दक्षता है। अतः लेखन शिक्षण में दक्ष करने के लिए विभिन्न अवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए बच्चों को अभ्यास कराना चाहिए जिससे बच्चे सुडौल एवं शुद्ध लिखना सीखें और लेखन कौशल में दक्ष हो सकें।

भाषा सीखने के चरण
सु – सुनना,
बो – बोलना,
प – पढ़ना
लि – लिखना

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

- शिक्षक प्रशिक्षक लेखन शिक्षण की प्रमुख विधियों के बारे में बताएँगे।
- लिखते समय बैठने का उचित ढंग बताएँगे।
- लिखते समय कागज की आँखों से दूरी कितनी हो, वास्तविक रूप से दिखाएँगे।
- कलम पकड़ने का उचित ढंग, शुद्ध एवं सुंदर लेख लिखकर दिखाएँगे।

प्रशिक्षुओं के लिए निर्देश

- ❖ प्रशिक्षु अपनी वास्तविक कक्षा एवं एक माह के इंटर्नशिप के दौरान उपर्युक्त बताई गई बातों का ध्यान रखेंगे।
- ❖ इंटर्नशिप वाले विद्यालय के बच्चे प्राथमिक कक्षाओं के होते हैं जिनमें से कुछ बच्चों को लिखने, बैठने, कलम पकड़ने आदि के सही तरीकों का ज्ञान नहीं होता है। अतः प्रशिक्षु उपर्युक्त तरीकों को करके दिखा सकते हैं, जिससे उन बच्चों को प्रत्यक्ष लाभ मिल सके।
- ❖ प्रशिक्षण के दौरान संबंधित विषय से जुड़े प्रश्न–उत्तर के लिए सभी बच्चों को अवसर प्रदान करेंगे।
- ❖ समूह कार्य में सभी की सहभागिता सुनिश्चित करेंगे।

गतिविधि

- ❖ उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित पाठ्य–पुस्तकों से पठित गद्यांशों के अभ्यास अथवा गतिविधि हेतु प्रशिक्षुओं द्वारा प्रयोग किया जायेगा।

गतिविधि का नाम : शिरोरेखा लगाओ

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : चार्ट पेपर, मार्कर।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम।

प्रशिक्षुओं के समक्ष उपर्युक्त पंक्ति को बिना शिरोरेखा के प्रस्तुत किया जाएगा; **यथा–**

र घु प ति रा घ व रा जा रा म प ति त पा व न सी ता रा म

उपर्युक्त पंक्ति को प्रशिक्षक/शिक्षक बिना शिरोरेखा के लिखते हुए इन पर लेखन शिक्षण संबंधी गतिविधियाँ करवाएँगे।

5.2 लेखन कौशल

व्यक्ति अपने भावों एवं विचारों का प्रकटीकरण भाषा के माध्यम से दो रूपों में करता है–

1. मौखिक भाषा के रूप में।
2. लिखित भाषा के रूप में।

भाषा का ध्वन्यात्मक रूप ही भाषा का मौखिक रूप कहलाता है। जब इन ध्वन्यात्मक रूपों को प्रतीकों के माध्यम से लिपिबद्ध करते हैं, तो वह भाषा का लिखित रूप कहलाता है।

लिखना– अपने भावों/विचारों को लिपिबद्ध करने का कौशल, लेखन कहलाता है। लेखन में दो कौशल सम्मिलित हैं–

1. बुनियादी लेखन कौशल
2. उच्च स्तरीय लेखन कौशल

1. बुनियादी लेखन कौशल–

- ❖ अक्षरों, मात्राओं की सही आकृति बनाना।
- ❖ शब्दों की सही वर्तनी एवं आधारभूत व्याकरण
- ❖ विराम चिह्न।
- ❖ वाक्य विन्यास।

2. उच्च स्तरीय लेखन कौशल–

- ❖ किसी विषय वस्तु को पढ़ने के उपरांत व्यवस्थित ढंग से सार्थक वाक्यों में लिखना।
- ❖ स्वतंत्र विचार को व्यवस्थित रूप में लिखना।

कक्षा शिक्षण के समय बच्चों को सार्थक उद्‌देश्यों के लिए भाषा प्रयोग का अवसर मिलता है। इसलिए बुनियादी लेखन कौशल तथा उच्चस्तरीय लेखन कौशल के मध्य संतुलन होना चाहिए।

5.3 लेखन कौशल के विकास के विभिन्न चरण

1. प्रारंभिक लेखन स्तर (उभरता लेखन)

- ❖ आड़ी–टेढ़ी रेखाएं खींचना, चित्र बनाना।

2. मध्यवर्ती लेखन

- ❖ वर्ण और अक्षर लिखना, शब्द लिखना।
- ❖ लिपि के उपयोग का आरंभ।

3. संरचनात्मक लेखन

- ❖ वाक्य संरचना, लिंग, वचन, क्रिया, काल आदि के अनुसार उपयुक्त शब्दों का वाक्यों में प्रयोग।

5.4 बोलने व लिखने में अंतर

बच्चे अपने परिवेश से काफी हद तक मौखिक भाषा सीख कर आते हैं पर वह जिस सहज तरीके से बोलकर अपने विचार व्यक्त करते हैं उसी सहजता के साथ अपनी बात को लिखित रूप में अभिव्यक्त नहीं कर पाते। इसका कारण है कि लिखने और बोलने में काफी अंतर है। इसे बेहतर समझने के लिए नीचे दिया गया उदाहरण देखें–

शिक्षक (हाथ से मेज़ की ओर इशारा करते हुए) 'नंदू वह उठा लाओ, यह चल नहीं रही है।'

अब अगर शिक्षक द्‌वारा कही गई इस बात को आपको लिखना हो तो आप शायद लिखेंगे– 'शिक्षक ने मेज पर रखी पेन की ओर इशारा करते हुए नंदू से पेन उठाकर लाने को कहा क्योंकि उनके पेन की स्याही खत्म हो गई थी और वह चल नहीं रही थी।

आप स्वयं समझ सकते हैं कि किसी भी कथन के बोलने और लिखने में कितना अंतर है।

बोलना	लिखना
1. बोलने में व्यक्ति हाव – भाव, इशारे और आवाज के उतार – चढ़ाव का उपयोग करते हैं। 2. कही गई बात का संदर्भ बातचीत में शामिल लोगों को पता होता है। 3. सुनने वाले इस बात को समझ के लिए प्रश्न पूछ सकते हैं, स्पष्टीकरण मांग सकते हैं आदि। 4. मौखिक वाक्य अक्सर व्यवस्थित नहीं होते हैं।	1. लिखने में सटीक शब्दावली, रोचकता क्रमबद्धता है और उपयुक्त वाक्य संरचना की जरूरत होती है। 2. लिखते समय संदर्भ का उल्लेख भी करना पड़ता है। 3. पाठक कौन होंगे इस बात को ध्यान में रखकर लेख लिखे जाते हैं। पाठक लेखक से प्रश्न पूछ कर स्पष्टीकरण नहीं माँग सकते। 4. लेखन में वाक्यों को सही क्रम व व्यवस्था में लिखा जाता है, अन्यथा पाठक को समझने में दिक्कत होती है।

(नोट– आरंभिक स्तर पर भाषा के पठन– लेखन क्षमता का विकास पृष्ठ संख्या 211–212)

5.5 लेखन का महत्त्व

- ❖ लिपि ज्ञान से बच्चे शुद्ध वर्तनी का प्रयोग कर सकते हैं और विचारों को लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकते हैं।
- ❖ भाषा सीखने के लिए लेखन कौशल अत्यन्त आवश्यक है।
- ❖ लेखन के माध्यम से ही ज्ञान, अनुभव, विचार आदि पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित किए जा सकते हैं।
- ❖ बौद्धिक विकास के लिए लेखन कौशल सीखना परम आवश्यक है।
- ❖ भाषा में एकरूपता तथा स्थायित्व लेखन के माध्यम से ही आता है।
- ❖ लिखित भाषा साहित्य भण्डार में वृद्धि करती है।
- ❖ लेखन के माध्यम से बच्चों में सर्जनात्मकता, कल्पनात्मकता, रचनात्मकता, क्रियाशीलता आदि का विकास होता है।

5.6 लेखन शिक्षण के उद्देश्य

- ❖ शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखना सीख सकें।
- ❖ विराम चिह्नों का उचित प्रयोग करना सीख सकें।
- ❖ अनुलेख, सुलेख तथा श्रुतलेख लिखना सीख सकें।
- ❖ व्याकरण युक्त भाषा का प्रयोग करना सीख सकें।
- ❖ वाक्यों में शब्दों, वाक्यांशों तथा उपवाक्यों का क्रम व्यवस्थित कर सकें।
- ❖ ध्वनि, ध्वनि समूहों, शब्द, मुहावरों आदि का उचित प्रयोग कर सकें।
- ❖ भाव व विचारों की अभिव्यक्ति को लिखित रूप में व्यक्त कर सकें।

5.7 व्यवस्थित लेखन के सोपान

भाषा की ध्वनियों को लिपिबद्ध करके शुद्ध, सुपाठ्य एवं सुंदर रूप में लिखकर प्रस्तुत करना लेखन कौशल से संबंधित है। लेखन के सोपान का प्रयोग कर हम लेखन के सुव्यवस्थित/ सुसंगठित रूप का लिखित प्रस्तुतीकरण करते हैं।

लेखन के प्रमुख सोपान निम्नवत् हैं–

- वर्णों को सुडौल लिखना सीखना/सिखाना।
- शुद्ध अक्षर विन्यास का ज्ञान/अभ्यास कराना।
- लिपि, शब्द, मुहावरों का ज्ञान/समझ विकसित करना/ कराना।
- सुंदर लेख का अभ्यास करना/कराना।
- वाक्य रचना के नियमों से परिचित होना/ बताना।
- वाक्य रचना, शुद्ध वर्तनी, विराम चिह्नों का प्रयोग सीखना/ सिखाना।
- विचारों को तार्किक क्रम में प्रस्तुत करना/कराना।

5.8 लेखन कौशल के आयाम

(नोट– आरंभिक स्तर पर भाषा के पठन–लेखन क्षमता का विकास पृष्ठ संख्या 209)

5.9 लेखन शिक्षण की विधियाँ

लेखन शिक्षण को अत्यधिक प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है, जो निम्नवत हैं–

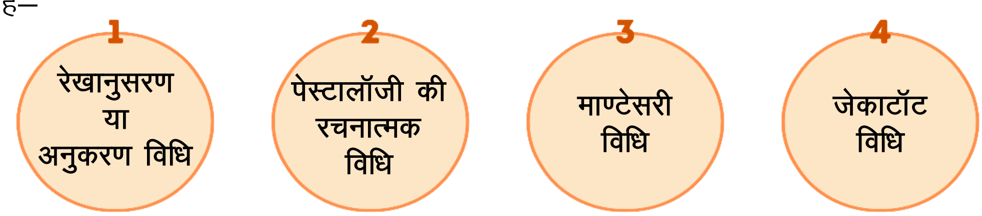

5	6	7	8
विश्लेषण विधि	संश्लेषण विधि	स्वतंत्र लेखन विधि	तुलना विधि

1. रेखानुसरण विधि या अनुकरण विधि

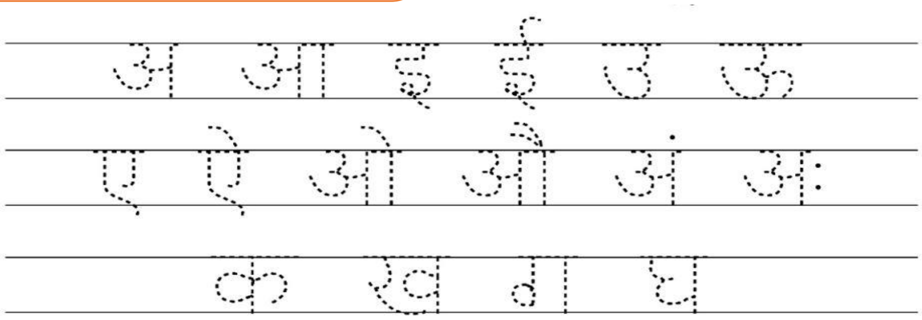

स्लेट, रेत, कागज या अन्य लिखे हुए वर्ण पर अँगुली फेरकर या चॉक/पेंसिल फेरकर बच्चों से वर्ण का अभ्यास कराया जाता है। इस विधि का प्रयोग प्रायः छोटी कक्षाओं के लिए किया जाता है।

2. पेस्टालॉजी की रचनात्मक विधि

यह विधि 'सरल से कठिन की ओर' सूत्र पर आधारित है। इस विधि में पहले वर्ण लेखन में उपयोग होने वाली विभिन्न रेखाओं, वृत्तों आदि का वर्गीकरण करना सिखाया जाता है। यह वर्गीकरण लेखन की सुविधा के अनुसार किया जाता है। इसके जनक पेस्टालॉजी हैं।

ट व क   र ख ख

3. माण्टेसरी विधि

लेखन विधि के लिए निम्न वर्णमाला देखिए

हिंदी वर्णमाला– लेखन विधि

माण्टेसरी विधि में गत्ते या लकड़ी से बने अक्षरों पर बच्चों को अँगुली फेरने को कहा जाता है। गत्ते/ लकड़ी के कटे अक्षरों के नीचे कागज रखकर पेंसिल चलाने का अभ्यास कराने से वर्ण लिखना सीखने में आसानी होती है। बच्चों के लिए यह गतिविधि रुचिकर होती है।

क | अ | च | ग | घ

4. जेकाटॉट विधि

इस विधि में बच्चों के समक्ष पूरा वाक्य लिखकर दे दिया जाता है। बच्चे अनुकरण कर इस वाक्य को लिखते हैं तथा शिक्षक द्वारा लिखे मूल वाक्य से मिलाकर एवं उनकी अशुद्धि का पता लगाकर स्वयं उसे दूर करते हैं।

वह कलम से सुंदर लेख लिखता है।

5. विश्लेषण विधि

विश्लेषण विधि में लेखन कौशल, शब्द से वाक्य एवं वाक्य से शब्द इन दो क्रमों में चलता है। इस विधि में चार प्रकार की गतिविधियाँ शामिल की जा सकती हैं–

(क) शब्द–विधि (ख) वाक्य–विधि (ग) चित्रशब्द–विधि (घ) वाक्यचित्र–विधि

(क) शब्द–विधि–

इस विधि में शब्द के द्वारा वर्ण लेखन सिखाया जाता है। जैसे–

अदरक – अ द र क

(ख) वाक्य–विधि–

इस विधि में वाक्य लिखकर वर्णों की पहचान कराई जाती है। जैसे–

आसमान में बादल छा गए – आ, स, मा, न

(ग) चित्रशब्द–विधि– इस विधि में चित्र के साथ शब्द रखकर वर्णों की पहचान कराई जाती है।

क बू त र

(घ) वाक्यचित्र–विधि

इस विधि में एक चित्र के साथ वाक्य लिखकर बच्चों को समझाया जाता है।

चिड़ियाँ उड़ रही हैं।

6. संश्लेषण विधि

संश्लेषण विधि में पहले वर्ण, फिर शब्द और वाक्य लिखना सिखाया जाता है।

क, म, ल – कमल – कमल का फूल

7. स्वतंत्र लेखन विधि

बिना वर्ण देखे वर्णों की ध्वनि को सुनकर लिखना। इसे श्रुतलेख भी कहा जाता है।

8. तुलना विधि

परस्पर मिलते–जुलते वर्णों की तुलना करके लिखवाया जाता है। जैसे–

यथा – ध, घ, म, भ

5.10 लिखना सिखाने में ध्यान देने योग्य बातें

लिखना सिखाते समय प्रशिक्षक/प्रशिक्षु को निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए–

1. **बैठने का ढंग**

   लिखना सिखाने से पूर्व उचित प्रकार से बैठने का अभ्यास कराना आवश्यक है। झुककर लिखने से रीढ़ की हड्डी टेढ़ी हो जाती है और आँखों पर भी अधिक बल पड़ता है। कुर्सी पर बैठते समय बालक के पैर जमीन पर सीधे रहें, घुटने 90 अंश का कोण बनाएं। कापी को टेढ़ा करके लिखना गलत आदत है।

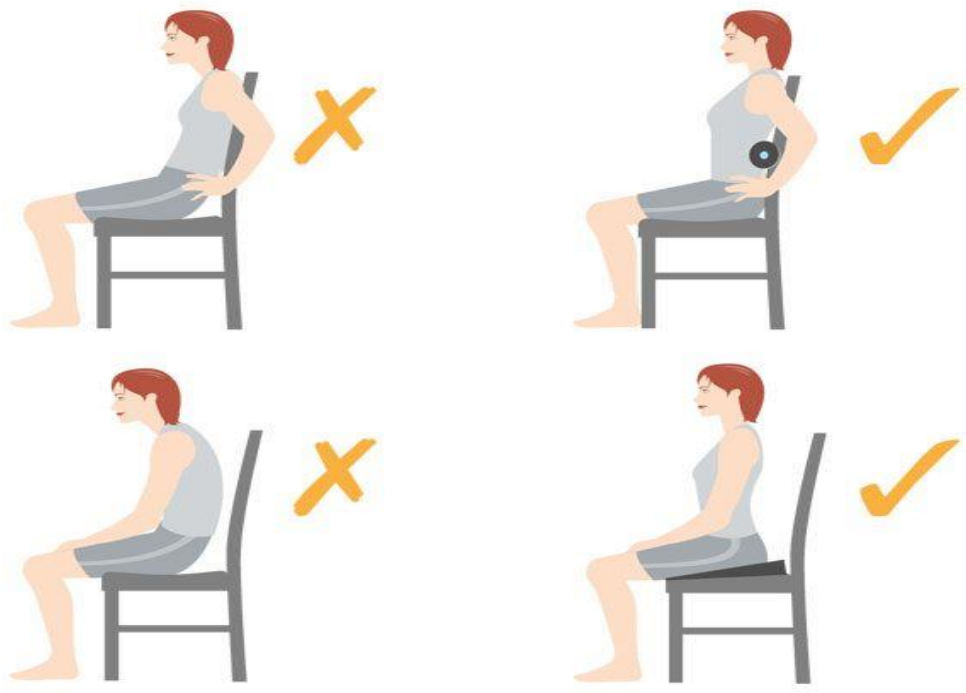

2. **आँखों से कागज की दूरी**

छात्र कॉपी को आँखों के एकदम पास न रखें और न ही आँखों से बहुत दूर रखें। आदर्श रूप में आँखों एवं कागज के बीच की दूरी 12 इंच होनी चाहिए एवं प्रकाश की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

3. **कलम पकड़ने की विधि**

कलम को तर्जनी, मध्यमा और अंगूठे के बीच रखकर पकड़ना चाहिए जो कलम की नोक से एक इंच ऊपर हो। कलम इस प्रकार पकड़ी जाय कि अंगुलियों को वर्णों के आकार के अनुसार घुमाया जा सके। लिखते समय कलाई घुमाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। कलाई लेखन के साथ आगे चलाई जानी चाहिए। हथेली को तभी पीछे हटाना चाहिए जब नई पंक्ति आरंभ हो।

4. **शिरोरेखा–**

वर्णों के ऊपर लगाई जाने वाली रेखा को शिरोरेखा कहते हैं। वर्णों पर शिरोरेखा का प्रयोग अवश्य होना चाहिए। शिरोरेखा की लम्बाई पूरे वर्ण में दोनों ओर वर्ण की चौड़ाई की एक तिहाई निकली होनी चाहिए। देवनागरी लिपि में वर्ण बाएँ से दाएँ की ओर लिखे जाते हैं। वर्ण पर शिरोरेखा लगाने के बाद मात्रा लगानी चाहिए।

5. **अक्षर की सुडौलता–**

देवनागरी लिपि में प्रत्येक अक्षर को बनाने का एक विशेष तरीका है। जब अक्षर सही तरीके से बनाए जाते हैं, तो वे देखने में सुंदर और सुडौल लगते हैं। अक्षर के प्रत्येक अंग का निश्चित अनुपात होना चाहिए। अक्षर या लेख लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

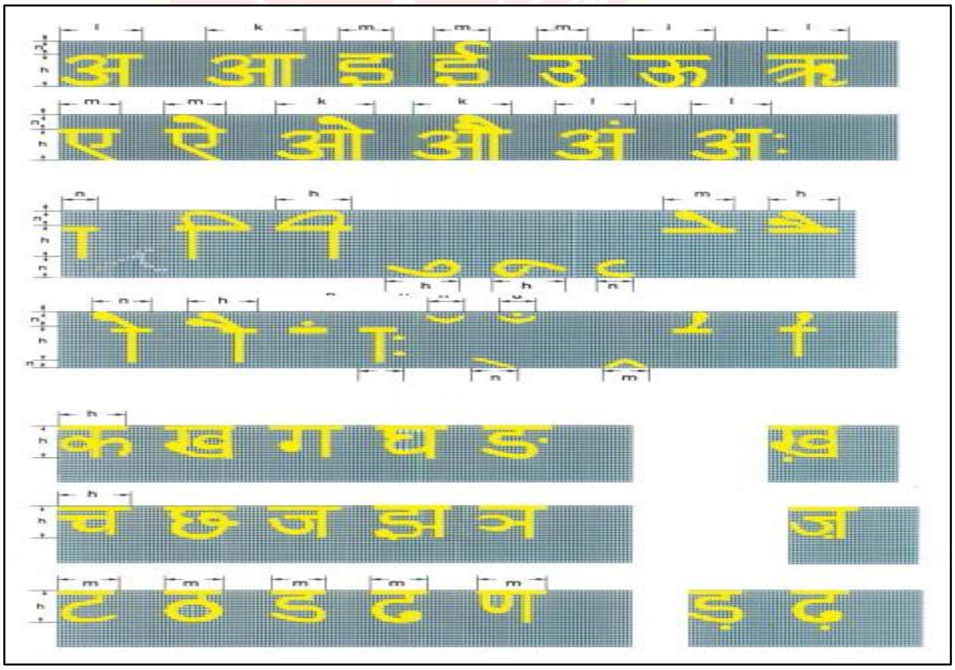

❖ अक्षरों में समानता हो अर्थात् अक्षर अधिक बड़े व छोटे नहीं होने चाहिए।
❖ कागज के चारों ओर कुछ स्थान छोड़कर ही लिखा जाय।
❖ दो वर्णों के बीच कलम के नीब की चौड़ाई तथा दो शब्दों के बीच में कम से कम एक अक्षर के बराबर स्थान अवश्य होना चाहिए।
❖ अक्षर सीधे एवं खड़े रूप में लिखे जाने चाहिए।
❖ दो पंक्तियों के मध्य एक पंक्ति के बराबर अंतर होना चाहिए।

5.11 सुलेख

सुलेख शब्द 'सु+लेख' दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ होता है– सुंदर लेख। इसका तात्पर्य है कि सुंदर ढंग से लिखी गई लिखावट भली प्रकार से पढ़ी व समझी जा सके। सुंदर लेख आकर्षक, कलापूर्ण और सुगठित होता है।

महात्मा गांधी के अनुसार
"सुंदर लेख के बिना शिक्षा अपूर्ण है।"

सुलेख के उद्देश्य

❖ बच्चे आकर्षक और सुडौल अक्षर लिखने में प्रवृत्त हों।
❖ बच्चों में सौंदर्यानुभूति जागृत हो।
❖ बच्चों के जीवन में सुव्यवस्था आए।
❖ बच्चों के हाथ, मस्तिष्क और हृदय में समन्वय हो।

सुलेख के लिए महत्त्वपूर्ण बातें

❖ आसन/बैठने का ढंग।
❖ कलम पकड़ने की विधि।
❖ अक्षरों का सुन्दर विन्यास।
❖ अक्षरों की सुडौलता एवं पूर्ण रचना।
❖ अक्षरों व शब्दों के बीच निश्चित अनुपात

सुलेख की विशेषताएँ

❖ सुलेख सुंदर और आकर्षक होता है।
❖ अक्षर सुडौल और सही अनुपात में लिखे होते हैं।
❖ लिखे हुए सुन्दर एवं स्पष्ट वाक्य अच्छी तरह से पढ़े जा सकते हैं।
❖ सुलेख में पंक्तियां सीधी होती हैं।
❖ दो शब्दों, पंक्तियों व अनुच्छेदों के बीच उचित अनुपात होता है।

5.12 अनुलेख

अनुलेख का अर्थ होता है– किसी लिखे हुए अक्षरों, शब्दों, वाक्यों का अनुसरण करके पुनः वही लिखना। दूसरे शब्दों में जब शिक्षक द्वारा बोल–बोल कर बोर्ड पर लिखा जाता है तब बालक भी उसका अनुसरण करते हुए उसी गति से लिखता है। कक्षा 1 से लेकर कक्षा 3 तक के बच्चों के लिए अनुलेख लाभकारी होता है। प्रारम्भ में बच्चों के अनुलेखन हेतु छपे अक्षरों, शब्दों अथवा वाक्यों के नीचे की पंक्ति से बिन्दुओं द्वारा रूपरेखा बनी रहती है। बच्चा इसी पर पेन्सिल चलाकर अनुलेखन का अभ्यास करता है, तदुपरांत धीरे–धीरे वह स्वतः अनुलेखन करने लगता है।

5.13 श्रुतलेख

श्रुतलेख का अर्थ होता है– 'सुनकर लिखना'। श्रुतलेख की विधि में शिक्षक बोलते हैं तथा बच्चे सुनकर लिखते हैं। श्रुतलेख में लेखन का आधार सुनना होता है। श्रुतलेख, सुनकर लिखने व समझने की योग्यता का अच्छा मापक है। विद्वानों का मत है कि सुलेख सुनकर शुद्धता तथा गति के साथ सुंदर ढंग से लिखने का प्रशिक्षण है।

श्रुतलेख के उद्देश्य

- ❖ बच्चों को शीघ्रता, शुद्धता एवं एकाग्रचित्त होकर लिखने का अभ्यास कराना।
- ❖ बच्चों के हाथ, कान एवं मस्तिष्क की क्रियाओं में संतुलन स्थापित करना।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : हवा में लिखना

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : बच्चों के नाम कार्ड, वर्ण/अक्षर कार्ड।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

- ❖ इस गतिविधि में एक बच्चा हवा में अक्षर लिखता है और बाकि बच्चे ध्यान से देखकर उस अक्षर को बताते हैं।
- ❖ सभी बच्चों के नाम का कार्ड बना लेंगे। आँखें बंद करके नाम कार्ड से किसी एक बच्चे का नाम निकालेंगे और उस बच्चे को आगे बुलाएँगे।
- ❖ उस बच्चे के कान में कोई भी एक वर्ण/अक्षर बोलेंगे। बच्चा बोले गए वर्ण/अक्षर को हवा में लिखेगा और बाकी बच्चे ध्यान से देखेंगे और बताएँगे कि कौन–सा वर्ण/अक्षर लिखा गया।

  इसी प्रकार अलग–अलग बच्चों को आगे बुलाएँगे और हवा में वर्ण/अक्षर लिखने को कहेंगे। (बच्चों के कान में वर्ण/अक्षर बोलने की जगह आप इस खेल के लिए वर्ण/अक्षर कार्ड का प्रयोग भी कर सकते हैं।)

नोट– आरंभिक स्तर पर भाषा के पठन–लेखन क्षमता का विकास गतिविधि संग्रह पृष्ठ संख्या–54

गतिविधि

गतिविधि का नाम : पीठ पर लिखना

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : कागज की गेंद, लिखी हुई कुछ पर्चियाँ।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

- ❖ इस गतिविधि में बच्चे जोड़ी में बारी–बारी से एक दूसरे की पीठ पर कोई वर्ण/अक्षर लिखते हैं और जिसके पीठ पर लिखा जाता है, वह लिखे गए वर्ण/अक्षर को बोर्ड/कागज/जमीन पर लिखता है।
- ❖ सभी बच्चे दो–दो की जोड़ी में खड़े होंगे। जोड़ी में खड़ा पहला बच्चा दूसरे बच्चे की पीठ पर कोई एक वर्ण/अक्षर लिखेगा और वह बच्चा पीठ पर लिखे गए वर्ण/अक्षर का अनुमान लगाएगा। इसके बाद दूसरा बच्चा पहले बच्चे की पीठ पर कोई वर्ण/अक्षर लिखेगा और वह बच्चा बताएगा कि उसकी पीठ पर कौन–सा वर्ण/अक्षर लिखा गया है।
- ❖ गलत जवाब देने पर, उसके जोड़ीदार से एक बार और पीठ पर अक्षर लिखने को कहेंगे और बच्चे को दोबारा अनुमान लगाने का मौका देंगे। इसी प्रकार बारी–बारी से कुछ वर्ण/अक्षरों के साथ खेल खेलेंगे।

नोट–आरंभिक स्तर पर भाषा के पठन–लेखन क्षमता का विकास गतिविधि संग्रह पृष्ठ संख्या–54

गतिविधि

गतिविधि का नाम : कंकड़ से अक्षर बनाना

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : कंकड़

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

- ❖ इस गतिविधि में बच्चे कंकड़ से शिक्षक द्वारा बोले गए वर्ण/अक्षर को जमीन पर बनाते हैं।
- ❖ बच्चों के साथ कक्षा से बाहर जाएँगे और कुछ कंकड़ लाएँगे। सभी बच्चे छोटे–छोटे समूह में बैठेंगे और प्रत्येक समूह को कुछ कंकड़ देंगे। कोई अक्षर बोलेंगे और प्रत्येक समूह उस वर्ण/अक्षर की आकृति को कंकड़ के द्वारा जमीन पर बनाएगा। बच्चों द्वारा किए जा रहे कार्य का अवलोकन करेंगे और जहाँ जरूरत होगी, मदद करेंगे। कंकड़ की जगह बच्चे बताए गए वर्ण/अक्षर को उँगली से या छोटी टहनी लेकर मिट्टी में भी बना सकते हैं। इसके लिए आवश्यक होगा कि बच्चे कक्षा के बाहर यह गतिविधि करें।

नोट– आरंभिक स्तर पर भाषा के पठन–लेखन क्षमता का विकास गतिविधि संग्रह, पृष्ठ संख्या–55

गतिविधि

गतिविधि का नाम : अक्षर से शब्द बनाएँ

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : अक्षर ग्रिड

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

- ❖ इस गतिविधि में बच्चे ग्रिड में दिए गए अक्षरों से शब्द बनाकर लिखते हैं।
- ❖ बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बैठाएँगे। प्रत्येक समूह को एक अक्षर ग्रिड देंगे। हर समूह के बीचो–बीच जमीन पर एक गोला बना लेंगे। अगर यह संभव न हो तो दीवार/

बोर्ड पर सीधी लकीरें खींच कर हर समूह के लिए एक–एक खाना बना लेंगे। अब हर बच्चे को चाक का एक–एक टुकड़ा देंगे। अब बच्चों को 2 मिनट का समय देंगे और ग्रिड में दिए गए अक्षरों से शब्द बना कर दी गई जगह में लिखने के लिए कहेंगे। समय शुरू होने से पहले शिक्षक उन्हें ऊँची आवाज में कहेंगे कि, ''आपका समय शुरू होता है अब!'' ग्रिड में दिए गए अक्षरों का उपयोग कर जितने शब्द संभव हो, बच्चे शब्द बनाएँगे और गोले में लिखेंगे।

❖ बच्चे सार्थक और निरर्थक, दोनों प्रकार के शब्द बना सकते हैं। समय समाप्त होने के बाद शिक्षक बोलेंगे कि "पत्थर बन जाओ।" और बच्चे बिना हिले एक जगह पर बैठे रहेंगे। शिक्षक बच्चों के बनाए हुए शब्दों को देखेंगे। इसके बाद प्रत्येक समूह को अपने बनाए हुए शब्दों को पढ़कर बताने के लिए कहेंगे।

नोट– आरंभिक स्तर पर भाषा के पठन–लेखन क्षमता का विकास गतिविधि संग्रह, पृष्ठ संख्या–58

बोध परीक्षण

1. लेखन कितने प्रकार का होता है?
2. जेकाटॉट विधि से आप क्या समझते हैं?
3. लेखन शिक्षण की विश्लेषणात्मक विधि को स्पष्ट कीजिए।
4. छोटी कक्षाओं में लेखन की कौन सी विधियाँ उपयोगी हो सकती हैं?
5. लिखते समय बैठने का सही ढंग क्या होना चाहिए?
6. कलम पकड़ने के उचित ढंग को स्पष्ट कीजिए।

समेकन

लिखना भाव एवं विचारों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। लेखन, शब्दों को क्रम से लिपिबद्ध एवं सुव्यवस्थित करने की कला है। लेखन के माध्यम से ही व्यक्ति अपने विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति लिखित रूप में करता है। लेखन का हम जितना अधिक अभ्यास करेंगे, हमारी लेखन शैली/लिखावट उतनी ही उन्नत होगी। सुलेख, अनुलेख, श्रुतलेख तीनों का प्रयोग कर बच्चों के लेखन कौशल को उन्नत बनाया जा सकता है।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि लेखन भाषा कौशल का एक आवश्यक और अनिवार्य अंग है। यह भाषा के विकास के लिए आवश्यक है एवं भाषायी शिक्षण कौशलों की अभिव्यक्ति में लेखन शिक्षण का विशेष महत्त्व है।

स्व आकलन

1. **नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वर्णों को लिखिए–**

अ	
ङ	
प	
फ	
ज	
च	
ग	

2. **वर्णों को मिलाकर शब्द बनाइए–**

अ + च + र + ज = **अचरज**
क + ल + र + व =
ब + च + प + न =
क + त + र + न =
क + स + र + त =
ब + र + ग + द =
न + ट + ख + ट =
स + र + प + ट =
थ + र + म + स =
द + म + क + ल =
प + र + व + ल =

3. **निम्नलिखित शब्दों में से वर्णों को अलग करके लिखिए–**

दशरथ = **द + श + र + थ**
अफसर =
कटहल =
पनघट =
समतल =
जलचर =
मतलब =
उपवन =
चमचम =
करवट =
अजगर =

4. **उचित शिरोरेखा लगाकर शब्द लिखिए–**

भ व न	....
ध ड़ क	....
ह्र द य	....
वि द् या ल य	....
ध नु ष	....
सुं द र	....
भु व ने श	....

विचार विश्लेषण

1. पेस्टालॉजी की रचनात्मक विधि को समझाइए।
2. शिरोरेखा किसे कहते हैं? सोदाहरण समझाइए।
3. लिखित अभिव्यक्ति का महत्त्व बताइए।
4. माण्टेसरी विधि का उपयोग कब किया जाता है?
5. शिरोरेखा किसे कहते हैं? दो उदाहरण देते हुए समझाइए।
6. लेखन शिक्षण का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।
7. श्रुतलेख का अर्थ एवं महत्त्व बताइए?
8. अनुलेख किसे कहते हैं?
9. बच्चों में अपेक्षित लेखन कौशलों का विकास किस प्रकार किया जा सकता है? लिखिए।
10. लेखन शिक्षण की विधियों का उल्लेख कीजिए।

राज्य हिन्दी संस्थान . उ.प्र. वाराणसी - उत्तिष्ठत जाग्रत

केस स्टडी

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अतः विद्यार्थियों की उपलब्धियों में परिवेश, समुदाय से सतत् अंतःक्रिया, कक्षा–शिक्षण के स्वरूप तथा अधिगम संबंधी शिक्षण शास्त्रीय प्रक्रियाओं का विशिष्ट प्रभाव पड़ता है। आस–पास के वातावरण, प्रकृति, वस्तुओं व लोगों से कार्य व भाषा दोनों के माध्यम से परिवेश से अंतःक्रिया करना। सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है, परिवेश से परस्पर अंतःक्रियाओं का विशिष्ट प्रभाव विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्धारण एवं अधिगम क्षमता पर भी पड़ता है। भाषा सम्बन्धी दक्षता पर बच्चों की अधिगम क्षमता के साथ–साथ उसके सामाजिक परिवेश का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है क्योंकि भाषा सामाजिक संवाद के माध्यम से अर्जित की जाती है।

यह भिन्नताएँ विद्यार्थियों की सृजनात्मक और अधिगम को पोषित करती हैं किंतु कई बार अधिगम बाधा का भी कारण भी बनती हैं। व्यैयक्तिक भिन्नता के प्रभाव से उत्पन्न सृजनात्मक या अवरोध के कारकों को समझने के लिए विविध प्रविधियां प्रयुक्त की जाती हैं। केस स्टडी इसी प्रकार की नवीन प्रवृत्ति है।

शिक्षक छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता को शिक्षण में महत्त्व देते हैं। बालक की भिन्नताओं के होते हुए भी प्रकृति तथा स्वभाव संबंधी सामान्य विशेषताएं होती हैं। भाषा सीखने की क्षमता और गति पर विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नता एवं वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

केस स्टडी से तात्पर्य है किसी भी– वस्तु, स्थिति का भलीभाँति बारीकी से जाँच पड़ताल करना व जानना। इसका बुनियादी आधार विद्यार्थी की जिज्ञासु प्रवृत्ति को माना जाता है। दूसरे शब्दों में मनुष्य का सम्पूर्ण ज्ञान उनकी जिज्ञासु प्रवृत्ति का परिणाम है और केस स्टडी किसी ज्ञान, अनुभव को पाने का साधन है। इस विधि में विद्यार्थी की स्वयं समाधान ढूंढ़ने में सक्रियता रहती है, जबकि अध्यापक की भूमिका विद्यार्थियों के समस्या से भलीभाँति परिचित कराना है। केस स्टडी बालक समूह या घटना के गुण–दोष एवं असामान्यताओं का विश्लेषण है।

केस स्टडी विधि का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रेडिक ली प्ले (Frederic Le Play) ने सन् 1829 ई0 में सामाजिक विज्ञान में किया। वहीं 1967 ई0 में बारने ग्लेजर एवं एन्सेलम स्ट्रॉस जैसे समाजशास्त्रियों ने पुनः इसको परिष्कृत रूप में सामाजिक विज्ञान में नवीन सिद्धान्त के रूप में प्रयुक्त किया। यह वस्तुतः प्रॉब्लम बेस्ड लर्निंग (Problem Based Learning) के रूप में ज्यादा जानते हैं। वर्तमान में केस स्टडी प्रविधि का सर्वाधिक प्रयोग शिक्षा जगत की समस्याओं को पहचानने और उपचार करने में किया जाता है।

'यंग' केस स्टडी को परिभाषित करते हुए लिखते हैं कि 'केस स्टडी किसी इकाई के जीवन की गवेषणा तथा विश्लेषण पद्धयति है चाहे वह एक व्यक्ति, परिवार, संस्था, हस्पताल, सांस्कृतिक समूह या सम्पूर्ण समुदाय हो।' अर्थात् केस स्टडी, गुणात्मक विश्लेषण का एक रूप है जिसमें किसी व्यक्ति, परिस्थिति या संस्था का बहुत सावधानी तथा पूर्णता के साथ अवलोकन किया जाता है।

केस स्टडी का उद्देश्य

1. विद्यार्थी स्वतंत्र होकर, स्वयं ही सृजनात्मक ढंग से समस्या पर विचार कर सकेंगे।
2. वे समस्या समाधान (Problem based Learning) पर पहुँचने में सक्रिय हो सकेंगे।
3. वे अपने पूर्व ज्ञान का प्रयोग करते हुए प्रमाणों को संग्रह कर सकेंगे ।
4. नवीन तथ्यों का अन्वेषण कर सकेंगे।
5. विद्यार्थियों में अभिप्रेरण एवं अभिव्यक्ति की क्षमता में वृद्धि हो सकेगी ।

केस स्टडी की विशेषताएँ

1. शिक्षण–अधिगम की समस्याओं का समाधान व्यक्तिगत रूप से किया जाता है।
2. केस स्टडी में प्रत्येक छात्र को अपने ढ़ंग से सीखने का अवसर दिया जाता है।
3. केस स्टडी प्रविधि के माध्यम से विद्यार्थियों की अधिगम सम्बन्धी समस्याओं को चिह्नित किया जाता है।
4. केस स्टडी के माध्यम से विद्यार्थियों में धारण शक्ति और अध्ययन सम्बन्धी अच्छी आदतों का विकास किया जा सकता है।
5. विद्यार्थियों में अपेक्षित अभिवृत्तियों का विकास होता है।
6. विभिन्न मानसिक स्तर के छात्रों को उनके ढंग से सीखने का अवसर मिलता है।
7. बहुस्तरीय शिक्षण में सहायता मिलती है।

केस स्टडी रिपोर्ट का प्रारूप

(क)	कवर पेज शीर्षक, नाम, दिनांक	
	1. शीर्षकः केस स्टडी रिपोर्ट 2. छात्राध्यापक का नाम 3. चयनित विद्यालय का नाम व पता 4. प्रस्तुति दिनांक	
(ख)	1. अनुक्रमणिका (विषयवस्तु की पृष्ठ संख्या सहित सूची)	
	2. छात्र/छात्रा का विवरणः केस स्टडी हेतु चयनित विद्यार्थी की व्यक्तिगत जानकारी	
	विद्यार्थी का नाम– जन्मतिथि– पुरुष/महिला/अन्य– पालक/अभिभावक का नाम– पिता– माता– अध्ययनरत कक्षा– पता– अभिभावक/माता–पिता की मासिक आय– पिता की शैक्षणिक/व्यावसायिक योग्यता– भाई..............,बहन .... भाई–बहन के बीच विद्यार्थी का क्रम–	

(ग)	प्रस्तावना	
(घ)	केस स्टडी का उददेश्य	
(ड.)	प्रस्तावना– चयनित केस स्टडी के चयन करने के सामान्य उद्देश्यों का स्पष्ट उल्लेख	
(च)	विशिष्ट उद्देश्य–(केस स्टडी के चयनित विद्यार्थी विशेष के चयन करने के स्पष्ट कारणों का उल्लेख कीजिए)	
(छ)	समस्या की प्रकृति • भाषा कौशल (सुनना, बोलना, पढ़ना,लिखना) सम्बन्धी • ध्वनि जागरूकता सम्बन्धी समस्या • शुद्ध उच्चारण न कर पाने की समस्या • मात्रा पहचान सम्बन्धी समस्या इत्यादि।	
(ज)	समस्या के संभावित कारण • तथ्यों का संकलन • तथ्यों का विश्लेषण • जाँच परिणाम	
(झ)	उपकरण एवं प्रयुक्त प्रविधि	
(ञ)	निष्कर्ष का विस्तृत विवरण	
(ट)	आगामी कार्ययोजना का निर्माण (जाँच निष्कर्षों के आधार पर)	

साभार : ईटर्नशिप मैनुअल 2023 SCERT उ०प्र० लखनऊ

हिन्दी में केस स्टडी हेतु विविध क्षेत्र

भाषा अधिगम में आने वाली सामान्य कठिनाइयाँ

1. उच्चारण में दोषः कुछ विशेष अक्षरों में विभेद न कर पाना। उदाहरण के लिए– श,ष,स । छात्र अधिकांशतः इन सभी वर्णों को एक रूप में गिन लेते हैं।
2. छात्र मात्राओं में विभेद नहीं कर पाते हैं जैसे इ, ई या,`, ` में उन्हें समझ में नहीं आता कि उन्हें वैसा लिखने में ए (े) की मात्रा या ऐ (ै) की मात्रा का प्रयोग नहीं कर पाते हैं। दीर्घ स्वर व लघु स्वर को समझ में लाने में उन्हें समय लगता है।
3. बच्चों को अपनी क्षेत्रीय भाषा से मानक भाषा तक पहुँचने में आदतन कठिनाई होती है। दैनिक जीवन में आस–पास से, परिवेश से जो शब्द भण्डार उनके मस्तिष्क में भर जाता है और हमेशा उसे प्रयोग में लाने के कारण वो शब्दों के मौलिक स्वरूप को बिगाड़ देते हैं वे इसी शब्द को अपने लेखन में भी प्रयोग करते हैं जैसे चिड़िया को प्रायः चुड़िया कहते हैं और लिखते समय चुडिया ही लिख देते हैं।
4. कठिन शब्दों का प्रयोग करने से वे बचाव करते हैं जैसे विद्यालय में ही वो प्रतिदिन आ रहे हैं पर विद्यालय पर निबंध या चार पंक्तियाँ लिखने को कहने पर वे बार–बार स्कूल शब्द का ही प्रयोग करते हैं। जो उन्हें विद्यालय के सापेक्ष आसान लगता है।
5. भाषा में अभ्यास कार्यो से बचना जैसे– सुबोपलि अर्थात सुनना एवं बोलनेकी प्रक्रिया तो तेज चलती है पर अंतिम पड़ाव लेखन तक पहँचते पहुँचते वे लेखन पर कार्य कम करना चाहते हैं। लेखन कायों में किसी अनुच्छेद को वैसे ही उतारना आम भाषा में नकल उतारना शीघ्रता से करते

हैं पर अपने मन से किसी अनुच्छेद को लिखने में या भावों को व्यक्त करने में असहज महसूस करते हैं।

6. अक्षरों को लिखने का सही तरीका नहीं अपनाते जैसे– अक्षरों को लिखते समय वे अक्षरों को नीचे से उपर बनाते हैं।

   अनुनासिक और अनुस्वार संयुक्ताक्षरों की ध्वनियों के बीच अंतर नही कर पाते है।

केस स्टडी हेतु अन्य प्रस्तावित विषय

1. कक्षा एक में अध्ययनरत विद्यार्थी द्वारा मातृभाषा में मौखिक बातचीत करने में सक्षम न होना।
2. प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों का ध्वनि चिहनों को न पहचानना।
3. कक्षा 1, 2 व 3 के विद्यार्थियों में प्रिंट चेतना का अभाव के कारणों का अध्ययन
4. कक्षा 1, 2 व 3 के विद्यार्थियों में ध्वनि चेतना का अभाव के कारणों का अध्ययन
5. प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों का धारा प्रवाह पठन में सक्षम न होना।
6. उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों में धारा प्रवाह पठन की क्षमता का न होना।
7. कक्षा 8 के विद्यार्थी का हिज्जे में पठन करने की क्षमता का अभाव।
8. कक्षा 7 के विद्यार्थियों में अर्थग्रहण की क्षमता का अभाव।
9. प्रारम्भिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी भाषा का शुद्ध उच्चारण न कर पाना।
10. श, ष, स ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण न कर पाना।

डी०एल०एड० प्रथम सेमेस्टर
मॉडल प्रश्न–पत्र
षष्टम प्रश्न–पत्र

समय : 1 घंटा	विषय : हिंदी	पूर्णांक : 25

निर्देश

1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के अंक उनके सम्मुख दिए गए हैं।
2. इस प्रश्न पत्र में कुल तीन प्रकार के प्रश्न हैं। प्रश्न संख्या 1 से प्रश्न संख्या 5 तक कुल 5 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं,प्रश्न संख्या 6 से प्रश्न संख्या 11 तक कुल 6 प्रश्न अति लघु उत्तरीय प्रश्न हैं एवं प्रश्न संख्या 12 से प्रश्न संख्या 18 तक कुल 7 प्रश्न लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर लगभग 25 शब्दों में तथा लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर लगभग 75 शब्दों लिखिए।

बहुविकल्पीय/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. संयुक्ताक्षर 'क्ष' किन वर्णों से मिलकर बना है? 1

(क) छ्, अ (ख) च्. छ

(ग) क्, ष (घ) क. ष

प्रश्न 2. अर्द्ध स्वर के उदाहरण हैं? 1

(क) ऋ, ऑ (ख) य, व

(ग) ङ, ण (घ) हिंदी वर्णमाला में अर्द्ध स्वर नहीं होते हैं।

प्रश्न 3. 'मसृण' का विलोम होगा? 1

(क) रूक्ष (ख) अमसृण

(ग) निर्मसृण (घ) स्निग्ध

प्रश्न 4. 'पुण्डरीक' का समानार्थक शब्द होगा– 1

(क) फूल (ख) चन्द्रमा

(ग) सूर्य (घ) कमल

प्रश्न 5. 'छिः छिः बहुत गंदा है' में विराम चिह्न होगा– 1

(क) प्रश्नवाचक चिह्न (?) (ख) विस्मयादि बोधक चिह्न (!)

(ग) अल्पविराम (,) (घ) अर्द्ध विराम (य)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6. वर्णमाला की परिभाषा लिखिए। 1

प्रश्न 7. स्वर को सोदाहरण परिभाषित कीजिए। 1

प्रश्न 8. उद्धरण चिह्न का प्रयोग किस दशा में होता है? 1

प्रश्न 9. 'रुद्राक्ष' का वर्ण विच्छेद कीजिए। 1

प्रश्न 10. गुलाब का 2 पर्यायवाची लिखिए। 1

प्रश्न 11. पढ़ते समय पाठ्य वस्तु की आँखों से कितनी दूरी होनी चाहिए? 1

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 12. देवनागरी लिपि की चार विशेषताएँ लिखिए। 2

प्रश्न 13. श्रुतिलेख तथा अनुलेख में क्या अंतर है? 2

प्रश्न 14. लेखन की माण्टेसरी विधि क्या है? 2

प्रश्न 15. अनुस्वार एवं अनुनासिक ध्वनियों में क्या अंतर है? 2

प्रश्न 16. अल्पविराम के प्रयोग की किन्हीं 2 दशाओं का उल्लेख कीजिए। 2

प्रश्न 17. अल्पप्राण एवं महाप्राण ध्वनियों में क्या अंतर है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । 2

प्रश्न 18. बच्चों में उच्चारण की अशुद्धि को दूर करने के लिए क्या–क्या उपाय करना चाहिए? 2

शुद्ध वर्ण उच्चारण हेतु ऑडियो

ऑडियो लिंक

https://drive.google.com/file/d/1PS7vNPVbauAL2sKRNLMVhr9IQqU7ZcIA/view?usp=sharing

संदर्भग्रंथ सूची

1. हिंदी भाषा – हरदेव बाहरी
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
3. हिंदी व्याकरण – कामता प्रसाद गुरु
4. हिंदी शब्दानुशासन – किशोरीदास बाजपेई
5. हिंदी भाषा – भोला नाथ तिवारी
6. भाषा विज्ञान और भाषा–शास्त्र – डा० कपिल देव द्विवेदी
7. भाषा शिक्षण हिंदी (भाग–1) – एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली
8. हिन्दी व्याकरण प्रशिक्षण साहित्य – राज्य हिन्दी संस्थान, वाराणसी।
9. देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण – केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
10. हिंदी व्याकरण – कामताप्रसाद गुरु
11. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना – डॉ० वासुदेवनन्दन प्रसाद
12. मातृभाषा हिंदी शिक्षण – एन०सी०ई०आर०टी०
13. हिंदी शिक्षण – डॉ० उमा मंगल

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी
(स्थापना वर्ष-1975)

निकट पुलिस लाइन, वाराणसी (पिनकोड-221001)

ई-मेल : rajyahindisansthan1975@gmail.com
वेबसाइट : rajyahindisansthanupvns.org.in